

Sample



gdfg

dfgdf

dfgdf

dfgdfg

dfgdf

Contact - dfgdf



श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपं महाद्युतिम् ।	तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्यवसम्भवम् ।	नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।	कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियंगुकालिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।	सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम् ।	बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।	सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।	छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।	सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।	रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्नाशम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिर्वर्धनम् ॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो वृते न संशयः ॥

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरूप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूँ। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूँ। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूँ। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूँ। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूँ। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूँ। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूँ। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वत्रूतिभिः सीद सादनम् ॥

यह स्तुति हमारी शक्ति और सच्चे आत्म आनन्द को जानने और उसका अनुभव करने में हमारी सहायता करती है तथा इससे सार्वभौमिक एकता, मधुरता और खुशहाली में प्रगति होगी।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

अर्थ— जो गुडहल के फूल के समान लाल है, जिसका जन्म कश्यप परिवार में हुआ है, जो बहुत उज्ज्वल है तथा अंधकार का शत्रु है और जो सभी पापों का नाश करता है, मैं उस दिवाकर को प्रणाम करता हूँ।

सार— नव ग्रह केवल भौतिक अर्थों में ही ग्रह या नक्षत्र नहीं हैं, वे केवल नौ में नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड के भौतिक अस्तित्व में उपस्थित सभी ग्रहों व नक्षत्रों में अंतर्निहित शक्ति हैं। सूर्य यहां सिर्फ पौधों द्वारा किए जाने वाले प्रकाशसंश्लेषण के लिए भौतिक उर्जा या गर्मी का स्रोत मात्र का प्रतिनिधि नहीं है, अपितु यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए चेतना का प्रतीक है। जैसेकि हम चेतना में जागते हैं, तो हम कम लड़खड़ाते हैं और कम गलतियां व पाप करते हैं तथा चेतना में नहीं उठते हैं, तो अधिक लड़खड़ाते हैं और अधिक गलतियां व पाप करते हैं (सभी पाप कार्य संपूर्ण स्वास्थ्य के बिगड़ने का कारण होते हैं)। अतः यहां सूर्य का उल्लेख सभी पापों का नाश करने के लिए किया गया है। सूर्य उज्ज्वल है और इसलिए यह अंधेरे का शत्रु है, ना केवल भौतिक अर्थों में बल्कि अज्ञानता के अंधकार का शत्रुहोने के संदर्भ में भी।

यह स्तुति नींद, जड़त्व और निष्क्रियता पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी। यह अवसाद और हताशा पर विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्यावसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

अर्थ— मैं उस चंद्रमा को प्रणाम करता हूँ, जो दही, शंख और ओस की बूंदों के समान सुन्दर और दीप्तिमान है, जिसका जन्म समुद्र मंथन से हुआ है, जो शशक का प्रतीक है तथा जो भगवान शिव के मुकुट/मस्तक की शोभा बढ़ाता है।

सार— चंद्रमा की सुन्दरता का वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य उस सिद्धान्त की ओर संकेत करने से है, जो सार्वभौमिक अथवा ब्रह्माण्ड के मस्तिष्क के समान है। ब्रह्माण्डीय मन को पौधों का पालन-पोषण करने वाला कहा जाता है। इससे लगता है कि चंद्रमा से उपचारात्मक गुण पौधों में हस्तांतरित होते हैं। मन संपूर्ण संसार में आरोग्यसाधक के रूप में सुविख्यात है।

जब हम चंद्रमा के सिद्धान्त का व्यक्तिगत स्तर पर विचार करते हैं, तो केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली से संबंधित तीन विशेषताएं दिखाई देती हैं— समुद्र के दूध से जन्म होना, शशक के समान होना तथा शिव के मस्तक की शोभा बढ़ाना। मन का जन्म अच्छी तरह से फैले हुए श्वेत तंत्रिका प्रणाली से, बुद्धि के साथ होना तथा मन जब वास्तव में स्वच्छ होता है, तो शिव के मुकुट की अथवा व्यक्तिगत रूप में स्वयं की सुन्दरता को बढ़ाता है।

यह स्तुति कमजोर और कोमल मन को दृढ़ बनाती है तथा व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों से लड़ने और उन पर विजय प्राप्त करने में शक्ति प्रदान करती है।

**धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— जिसका जन्म धरती के गर्भ से हुआ है, बिजली के चमकने जैसे उज्ज्वल, और जिसकी शक्तिशाली भुजाएं हैं, मैं उस युवा मंगल को प्रणाम करता हूँ।

सार— भारतीय ज्योतिष के अनुसार, मंगल अग्नि के ब्रह्माण्डीय सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है तथा शौर्य, उद्यमशीलता, गतिशीलता, प्रलय, भयानक आग, महामारी, दंगे, चक्रवात और युद्ध का कारक माना जाता है। यह स्तुतिअग्नि सिद्धान्त को विनियमित करने के लिए अभिप्रेरित करता है तथा इसे रचनात्मक दिशा में श्रृंखलाबद्ध करता है। यह एक राजा के सिद्धान्त के समान है।

संभवतः यह स्तुति उन सभी स्थिति में सहायता करता है, जो उपापचय को कम करे तथा शरीर को मंदगति, आलस्यपूर्ण और कमजोर बनाए। यह उर्जा प्रदान करके शरीर के सभी अंगों को सक्रिय कर सकता है। इसके अतिरिक्त, संभवतः यह शारीरिक प्रणाली के उत्तेजना, क्रोध और अत्यधिक सक्रियता को नियंत्रित करता है।

**प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— लालिमा युक्त श्याम वर्ण के दिखने वाले और अशोक के वृक्ष की कली के समान अद्वितीय सुन्दर शांत प्रकृति के बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमत्ता और संयम से संबंधित है। धूसर बिन्दू मस्तिष्क की बुद्धि को दर्शाता है, जो कि असभ्य और बर्बर भावना व स्वभाव पर नियंत्रण रखता है। अतः यह संयम और अनुग्रह का शासकीय सिद्धान्त है।

**देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥**

अर्थ— जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, जो सुनहरे वर्ण के हैं तथा जो त्रिलोक के बुद्धि के स्वामी हैं, उन बुद्धिमान बृहस्पति को मैं प्रणाम करता हूँ।

सार— यह स्तुति स्पष्ट रूप से बुद्धिमान व्यक्ति को समर्पित है, जिसका मस्तिष्क के सभी केन्द्रों पर शासन है और इसप्रकार से वह चेतना के सभी तीन स्तरों स्वप्न, नींद और जागरण पर भी शासन करता है। सुनहरा वर्ण उस श्रेष्ठतम प्रकाश का सूचक लगता है, जो प्रत्येक गतिविधि पर शासन करता है। यह केंद्रिय तंत्रिका प्रणाली में जालीदार प्रणाली का प्रतिनिधित्व भी करता है, जो कि मस्तिष्क में सभी केन्द्रों की गतिविधि को सुनिश्चित करता है।

**हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ— जो बेला के फूल और बर्फ के समान दीप्तिमान हैं, जो असुरों के सर्वश्रेष्ठ गुरु हैं तथा जो सभी शास्त्रों के प्रवक्ता हैं, मैं उस शुक्र को प्रणाम करता हूँ।

सार— यह स्तुति उस शुक्र को समर्पित है, जो भावनाओं एवं अन्तर्निहित प्रकृति के व्यवस्थित प्रशासन के लिए उत्तरदायी सिद्धान्त का सूचक प्रतीत होता है। ब्रह्माण्ड के हित के लिए इस सिद्धान्त के द्वारा यौन शक्ति और भौतिकशक्ति, जो कि दुराचारी हो सकती हैं, उन पर प्रत्यक्ष रूप से शासन किया जाता है। संरचनात्मक रूप से यह मस्तिष्क में संपूर्ण अंग तंत्र के संचालन का प्रतिनिधित्व करता है।

यह स्तुति जीवन और ब्रह्माण्ड के स्थायीकरण, स्फूर्ति, पर्याप्तता, उत्साह और प्रेम का प्रतिफल प्रतीत होता है।

**नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥**

अर्थ- मैं उस स्थिर शनि को प्रणाम करता हूँ, जो नीले काजल के समान आभा वाले हैं, जो सूर्य के पुत्र हैं, यम के बड़े भाई हैं, तथा जिनका जन्म सूर्य और उनकी पत्नि छाया से हुआ है।

सार- यह स्तुति शनिदेव को समर्पित है, जो कि स्थिरता के देवता प्रतीत होते हैं। यदि अनजाने में अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह प्रगति को धीमा कर सकता है, यदि उचित रूप से अभिव्यक्त किया जाता है, तो यह असामान्य और अव्यवस्थित घटनाओं को रोक सकता है। 'यम का बड़ा भाई' होना यह दर्शाता है, कि यम जीवन और मृत्यु के नियमन के लिए जिस सिद्धान्त अथवा देवत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके समायोजन में स्थिरता महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 'सूर्य का पुत्र' होना यह दर्शाता है, कि इसमें ज्ञान और अज्ञानता का प्रकाश व अंधकार की शक्ति है,। यह विकास की सीमा, जैविक क्षमता, शरीर में नकारात्मक उर्जा तंत्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

**अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ- मैं उस शक्तिमान और साहसी राहु को प्रणाम करता हूँ, जो अर्ध शरीर वाला है, जो सूर्य और चंद्रमा तक को भी पीड़ित कर सकता है तथा जिसका जन्म सिंहिका के गर्भ से हुआ है।

सार- यह स्तुति राहु को समर्पित है। राहु अंतरिक्ष और समय में स्थित एक बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए उत्तर की ओर चला जाता है।

यह ब्रह्माण्ड आश्चर्यों से भरा हुआ है। इस ब्रह्माण्ड के सृजन और विकास में अनेक समूहों और देवताओं का योगदान है। जो इस जगत में नकारात्मक और बुरा प्रतीत होता है, वह भी इसी सृजन का ही एक भाग है। इसलिए सार्वभौमिक कल्याण के लिए यह स्तुति राहु को समर्पित है।

पौराणिक कथाओं में राहु को विप्रचिती और सिंहिका का पुत्र कहा गया है। ये दो कक्षों के मिलन बिन्दु का प्रतीक जान पड़ता है, जिससे राहु उत्पन्न होता है, ताकि वे मानसिक अंधेरों के लिए उत्तरदायी भौतिक बलों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। अतः व्यक्तिगत दृष्टि कोण से राहु उस स्थान और समय का प्रतिनिधित्व करता है, जब व्यक्ति मानसिक अंधकारों, भ्रम, कमजोर स्मरण शक्ति से पीड़ित होता है, तथा जब वह किसी भूत के अधीन होने का काव्यनिक चित्र बना सकता है।

हालांकि, निद्रा, विस्मृति का उचित सीमा तक होना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। अतः राहु को शुभ फलदायक कहा जाता है, सिवाय जन्म कुण्डली में स्थित कुछ परिस्थितियों और नक्षत्रों को छोड़कर।

**पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥**

अर्थ- जो पलाश के फूलों के समान लाल है, जो तारों और ग्रहों का मस्तक है और जो रौद्र रूप वाला भयावह है, मैं उस केतु को प्रणाम करता हूँ।

सार- यह स्तुति केतु को समर्पित है। केतु वह बिन्दु है, जब चंद्रमा धरती द्वारा सूर्य के परिक्रमा पथ को काटते हुए दक्षिण की ओर चला जाता है।

केतु व्यक्ति के स्वभाव में अथवा ब्रह्माण्ड में हिंसा के सिद्धान्त को दर्शाता है। 'रुद्र' शब्द विनाश का प्रतीक है। सार्वभौमिक एवं साथ ही व्यक्तिगत जीवन में अधिकांश लोगों को विनाश और हिंसा से खतरा होता है। हालांकि, ब्रह्माण्डीय घटनाओं से विनाश और हिंसा को पृथक नहीं किया जा सकता है और जब यह उचित रूप में होता है, तो यह जीवन के आवश्यक और स्वास्थ्यवर्द्धक निर्माण में सहायक होता है। शरीर रचना, शारीरिक क्रिया विज्ञान और गर्भविज्ञान की पुस्तकों में विनाश की अनेक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया

है।

अतः व्यक्तिगत जीवन और स्वभाव में हिंसा को नियंत्रित करने वाले केतु की स्तुति कहीं अधिक उचित है।

फलश्रुति

**इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।**

अर्थ— अब यह स्तुति समाप्त होती है। जो भी व्यक्ति महर्षि व्यास द्वारा रचित इस स्तुति को दिन अथवा रात्रि के समय एकाग्रचित्त और शांतचित्त होकर पढ़ता या सुनता है, वह सभी प्रकार की आपदाओं से मुक्त हो जाता है।

सार— नवग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति वास्तविक रूप में व्यक्ति को सच्चे आत्म का ज्ञान करवाता है तथा अब तक अनुपलब्ध उन उर्जा या शक्तियों को प्राप्त करने में सहायता करता है, जो कि विभिन्न रूपों में देवताओं के प्रतीक मानी जाती हैं।

**नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।**

अर्थ— नर, नारी और शासक को अतुलनीय समृद्धि, स्वास्थ्य और शक्ति की प्राप्ति होती है तथा उनके बुरे स्वप्नों व विचारों का नाश होता है।

सार— सभी ग्रहों और नक्षत्रों की स्तुति से सुख—समृद्धि, स्वास्थ्य व शक्ति प्राप्त होती है। विनाशक गुणों के कारण सभी प्रकार की दरिद्रता, बुरे स्वप्न और बुरे विचार लुप्त हो जाते हैं।

**ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।**

अर्थ— जैसा कि व्यास ऋषि ने कहा है जो कि निःसन्देह, अचूक और सत्य है, कि ग्रहों और नक्षत्रों के अशुभ प्रभाव के कारण उत्पन्न चोर, अग्नि आदि की समस्याएं निरस्त हो जाती हैं।

सार— इस प्रकार महर्षि व्यास इस सत्य की घोषणा करते हैं, कि इन स्तुतियों का जाप व अध्ययन करने से सभी ग्रहों के प्रकोप और आपदाओं से मुक्ति मिलती है।

श्री महर्षि व्यास द्वारा रचित नवग्रह स्तोत्र समाप्त।

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन	: 18 दिसम्बर 1973 (मंगलवार)	सांपातिक काल	: 07:36:55 hrs
ज्योतिषिय वार	: सोमवार	सूर्योदय	: 06:36:32AM
जन्म समय	: 01:45:00	सूर्यास्त	: 05:03:05PM
जन्म स्थान	: Ballia (up) , INDIA	अयनांश	: N.C.Lahiri (023:29:36)
रेखांश	: 084:10:00E	विक्रम संवत	: 2030
अक्षांश	: 025:45:00N	शक संवत	: 1895
समयक्षेत्र	: -05:30:00 hrs	संवत्सर	: प्रमादी
समय संशोधन	: 00:00:00 hrs	संवत्सर अधिपति	: इन्द्राग्नि
जी. एम. टी. समय	: 20:15:00 hrs	तत्कालीन दशा	: गुरु : मंगल : शनि
स्थानीय समय संस्कार	: 00:06:40 hrs	दशा भोग्यकाल	: चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26
स्थानीय समय	: 01:51:40 hrs	भयात	: 27: 30: 35 घटी
इष्टकाल	: 47: 52: 16 घटी	भभोग	: 61: 31: 25 घटी

अवकहड़ा चक्र

लग्न	: कन्या
लग्नाधिपति	: बुध
राशि (चन्द्रमा)	: कन्या
राशिपति	: बुध
नक्षत्र	: हस्ता
नक्षत्रपति	: चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	: 2
पाया	: स्वर्ण
ऋतु	: हेमन्त
मास	: पौष
पक्ष	: कृष्ण
तिथि	: नवमी
तिथि श्रेणी	: रिक्ता
तिथि पति	: सूर्य
करण	: गरिज
करण श्रेणी	: चर
करणपति	: वासुदेव
गण	: देव
वर्ण	: वैश्य
योनि	: महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग	: सौभाग्य
रज्जु	: कंठ
वश्य	: द्विपद

तत्व	: अग्नि
तत्वाधिपति	: मंगल
विहग	: वायस
नाड़ी	: आदि
नाड़ी पद	: मध्य
वेध	: शतभिषा
आद्याक्षर	: श

घात चक्र

राशि (सूर्य)	: मिथुन
मास	: भद्रा
तिथि	: 5,10,15
वार	: शनिवार
नक्षत्र	: श्रावण
प्रहर	: 1
लग्न	: मीन
सूर्य सिद्धान्त योग	: सुकर्मन
करण	: कौलव

पाश्चात्य ज्योतिषिय सारिणी

सूर्य राशि	: धनु
देकानेट	: 3
फेस	: VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य)	: तुला
लग्न (पाश्चात्य)	: तुला
सूर्य का अवधिपति	: मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति	: शुक्र
अवधि बदलाव	: (मंगल, शनि), (बुध, शुक्र), (शुक्र, बुध), (शनि, मंगल)

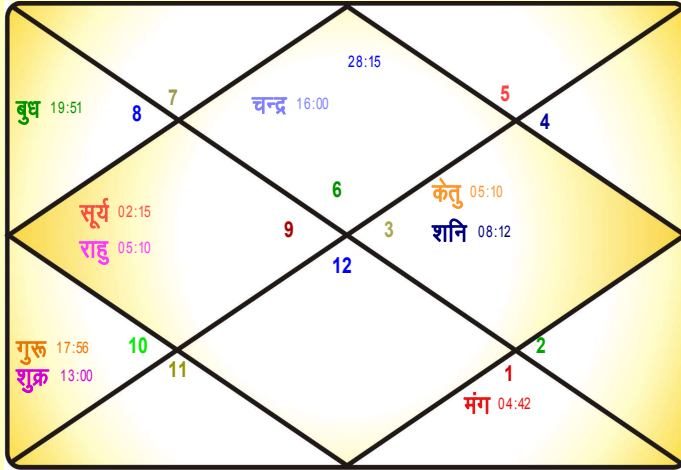
जन्म दिन का ग्रह : मंगल

जन्म समय का ग्रह : शनि

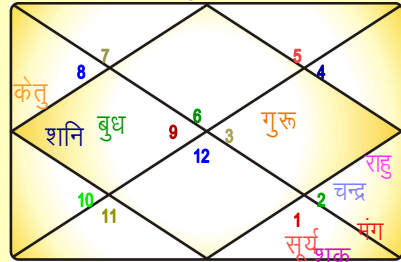
ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र - चरन	न० पति	प्रकारक	विशेष	विशेष
लग्न	कन्या	बुध	28:15:29	चित्रा.2	मंगल
सूर्य	धनु	गुरु	02:15:49	मूला.1	केतु	दारा	मित्र के भाव में	ग्रस्ति
चन्द्रमा	कन्या	बुध	16:00:57	हस्ता.2	चन्द्रमा	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	---
मंगल	मेष	मंगल	04:42:18	अश्विनी.2	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोन	---
बुध	वृश्चिक	मंगल	19:51:24	ज्येष्ठा.1	बुध	आत्म	शत्रु के भाव में	---
गुरु	मकर	शनि	17:56:39	श्रवण.3	चन्द्रमा	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शुक्र	मकर	शनि	13:00:16	श्रवण.1	चन्द्रमा	मात्रि	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शनि व	मिथुन	बुध	08:12:33	अरिद्रा.1	राहु	अपत्या	तटस्थ भाव में	ग्रस्ति
राहु व	धनु	गुरु	05:10:35	मूला.2	केतु	...	मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
केतु व	मिथुन	बुध	05:10:35	मृगशिरा.4	मंगल	...	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
हर्षल	तुला	शुक्र	03:20:59	चित्रा.4	मंगल	...	---	---
नेपच्यून	वृश्चिक	मंगल	14:20:41	अनुराधा.4	शनि	...	---	शुभ ग्रह के साथ
प्लूटो	कन्या	बुध	13:11:14	हस्ता.1	चन्द्रमा	...	---	दुष्ट ग्रह के साथ

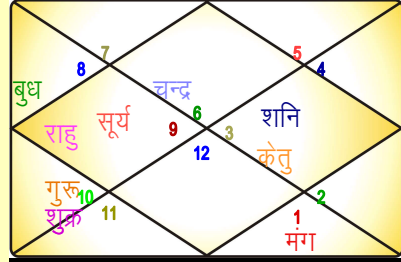
लग्न कुण्डली



नवांश कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



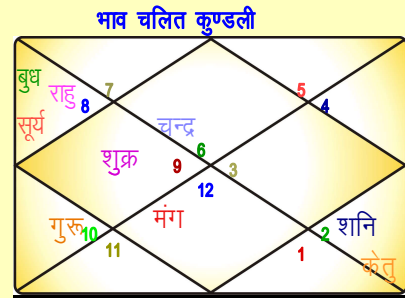
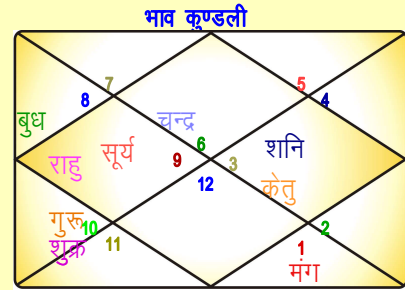
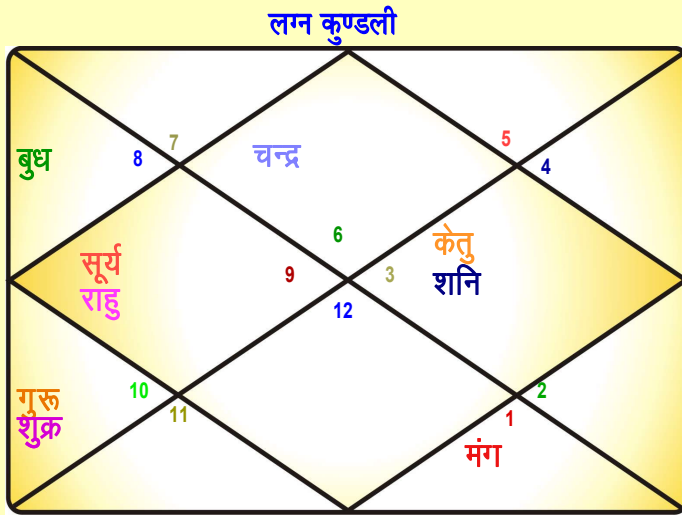
ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	64	348	186	52	110	105	250	67	247	5	46	345
सूर्य	296	---	284	122	348	46	41	186	3	183	301	342	281
चन्द्रमा	12	76	---	199	64	122	117	262	79	259	17	58	357
मंगल	174	238	161	---	225	283	278	64	240	60	179	220	158
बुध	308	12	296	135	---	58	53	198	15	195	313	354	293
गुरु	250	314	238	77	302	---	355	140	317	137	255	296	235
शुक्र	255	319	243	82	307	5	---	145	322	142	260	301	240
शनि	110	174	98	296	162	220	215	---	177	357	115	156	95
राहु	293	357	281	120	345	43	38	183	---	180	298	339	278
केतु	113	177	101	300	165	223	218	3	180	---	118	159	98
हर्षल	355	59	343	181	47	105	100	245	62	242	---	41	340
नेपच्यून	314	18	302	140	6	64	59	204	21	201	319	---	299
प्लूटो	15	79	3	202	67	125	120	265	82	262	20	61	---

0,1,369 कन्जक्शन 59,60,61,299,300,301 सेकस्टाइल 89,90,91,268,270,271 स्कवारर
 119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्स 179,180,181 अपोजीसन

भाव स्फूट और कुण्डली

भाव संख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	कन्या	028:15:29	कन्या	13:22:19	तुला	13:22:19
II	तुला	028:29:08	तुला	13:22:19	वृश्चिक	13:35:58
III	वृश्चिक	028:42:47	वृश्चिक	13:35:58	धनु	13:49:37
IV	धनु	028:56:27	धनु	13:49:37	मकर	13:49:37
V	मकर	028:42:47	मकर	13:49:37	कुम्भ	13:35:58
VI	कुम्भ	028:29:08	कुम्भ	13:35:58	मीन	13:22:19
VII	मीन	028:15:29	मीन	13:22:19	मेष	13:22:19
VIII	मेष	028:29:08	मेष	13:22:19	वृष	13:35:58
IX	वृष	028:42:47	वृष	13:35:58	मिथुन	13:49:37
X	मिथुन	028:56:27	मिथुन	13:49:37	कर्क	13:49:37
XI	कर्क	028:42:47	कर्क	13:49:37	सिंह	13:35:58
XII	सिंह	028:29:08	सिंह	13:35:58	कन्या	13:22:19



ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	64	348	186	52	110	105	250	67	247	5	46	345
दूसरा भाव	34	318	156	21	79	75	220	37	217	335	16	315
तीसरा भाव	4	287	126	351	49	44	189	6	186	305	346	284
नादिर	333	257	96	321	19	14	159	336	156	274	315	254
पौंचवा भाव	304	227	66	291	349	344	129	306	126	245	286	224
छठवा भाव	274	198	36	261	319	315	100	277	97	215	256	195
सातवा भाव	244	168	6	232	290	285	70	247	67	185	226	165
आठवा भाव	214	138	336	201	259	255	40	217	37	155	196	135
नवा भाव	184	107	306	171	229	224	9	186	6	125	166	104
एम सी	153	77	276	141	199	194	339	156	336	94	135	74
न्यारहवा भाव	124	47	246	111	169	164	309	126	306	65	106	44
बारहवा भाव	94	18	216	81	139	135	280	97	277	35	76	15

0,1,359 0,9,३५६ कन्जक्शेन 59,60,61,299,300,301 सेक्सटाइल 89,90,91,269,270,271 स्कवायर
 119,120,121,239,240,241 ट्राइन 149,150,151,209,210,211 क्वीनकक्सं 179,180,181 अपोजीसन

ग्रह मैत्रि चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु
♃	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	सम
♄	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र
♅	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
♆	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
♇	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
♈	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम

तत्कालिक मैत्री

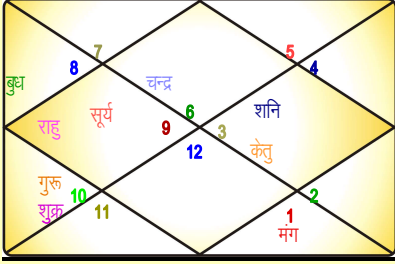
ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
☾	चन्द्रमा	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
♂	मंगल	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♃	बुध	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
♄	गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
♅	शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
♆	शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
♇	राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♈	केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

पचंधा मैत्री

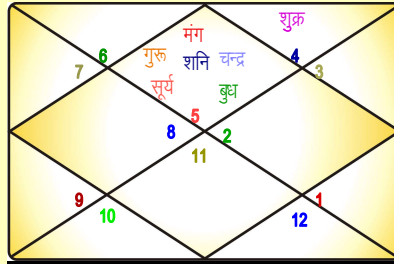
ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	अधिमित्र	सम	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
☾	चन्द्रमा	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम
♂	मंगल	सम	सम	अधिशत्रु	अधिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु
♃	बुध	अधिमित्र	सम	शत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	मित्र
♄	गुरु	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र
♅	शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	सम	अधिमित्र
♆	शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	सम
♇	राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम
♈	केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	शत्रु

षोडश वर्ग

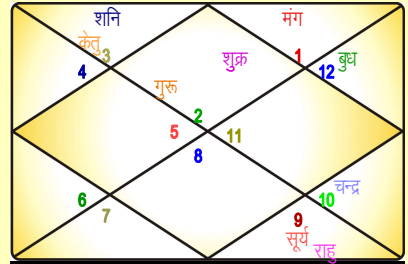
लग्न (जन्म) कुण्डली



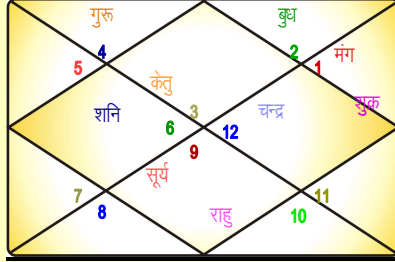
होरा कुण्डली



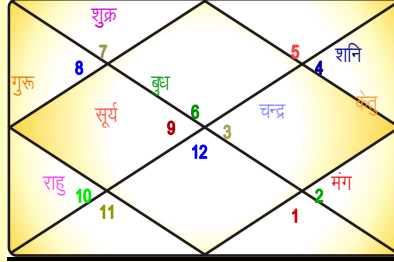
द्रेष्काण कुण्डली



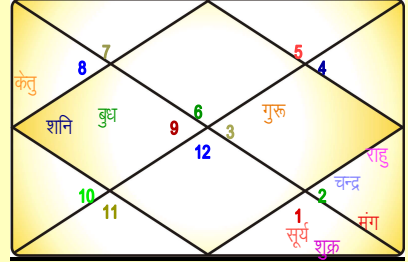
चतुर्दश कुण्डली



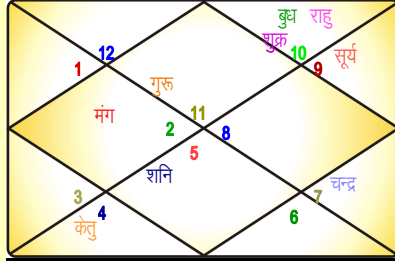
सप्तमास कुण्डली



नवाश कुण्डली

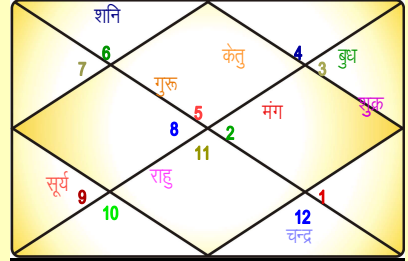


दशमास कुण्डली

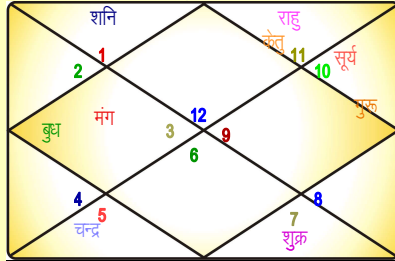


- D1 मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
- D2 धन दौलत के लिए
- D3 सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
- D4 भाग्य और स्थायशी मकान
- D7 संतान और उनकी संतान
- D9 जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
- D10 कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
- D12 माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
- D16 वाहन से संबंधित बातें
- D20 आध्यात्मिक रूझान
- D24 शिक्षा, ज्ञान और समझ
- D27 ताकत और दुर्बलता
- D30 दरिद्रता, कठिनाईयों और दुर्गति
- D40 शुभ-अशुभ घटनाएँ
- D45 सभी मुद्दों के लिए
- D60 सभी मुद्दों के लिए

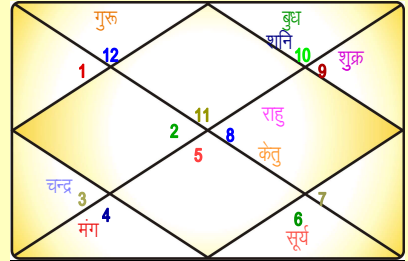
द्वादशमास कुण्डली



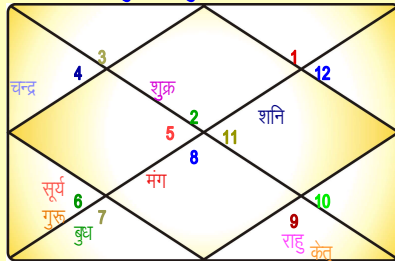
षोडशमास कुण्डली



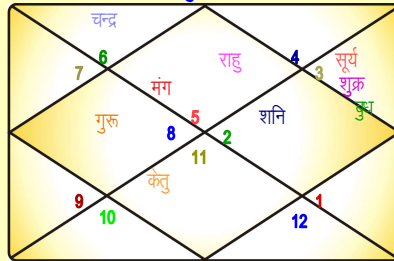
विंशमास कुण्डली



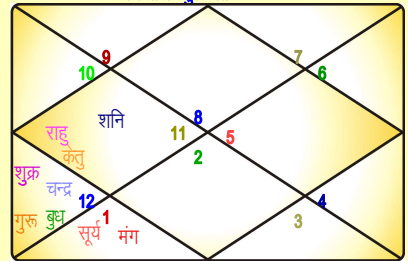
चतुर्विंशमास कुण्डली



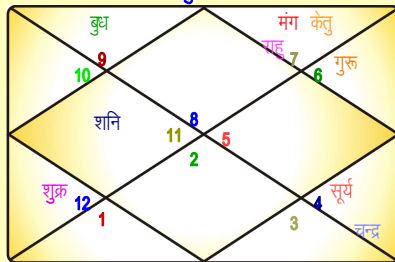
सप्तविंशमास कुण्डली



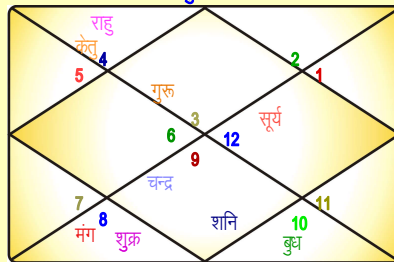
त्रिंशमास कुण्डली



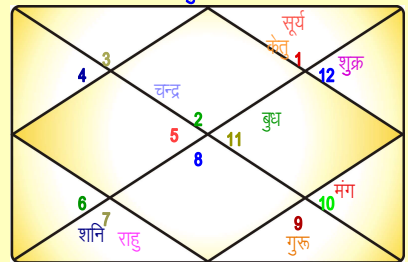
अष्टवेदाश कुण्डली



अश्ववेदाश कुण्डली



पञ्चाश कुण्डली



ग्रहों का षडबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युगम अयुगम बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
ट्रेककन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	257.42	199.41	255.27	214.63	159.94	190.96	171.69
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	08.89	25.69	31.92	42.80	23.44	55.31	36.68
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	104.47	110.06	173.09	122.64	93.25	101.24	100.12
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	00.30	25.42	07.50	30.00	45.00	45.00	60.00
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	60.00	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	08.57
द्रिक बल	-31.39	-02.62	-10.34	-23.64	-17.60	-19.69	00.23
कुल षडबल	399.69	409.39	474.58	412.14	338.31	415.68	377.30
षडबल (रूप में)	6.66	6.82	7.91	6.87	5.64	6.93	6.29
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	5	4	1	3	7	2	6
इष्ट फल	04.96	19.95	16.83	33.93	13.93	39.88	31.05
कष्ट फल	55.04	40.05	43.17	26.07	46.07	20.12	28.95
दिप्ति बल	100.00	25.42	40.81	26.59	15.23	52.01	58.02

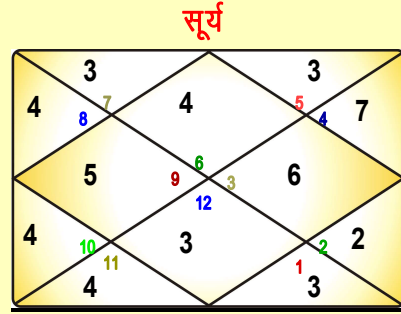
भाव बल

भाव संख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव द्विष्टिबल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भावबल योग	462.82	491.97	466.91	316.69	412.57	374.15	345.57	539.39	442.35	434.49	409.69	437.87
भावबल (रूप में)	7.71	8.20	7.78	5.28	6.88	6.24	5.76	8.99	7.37	7.24	6.83	7.30
तुलनात्मक स्थिति	4	2	3	12	8	10	11	1	5	7	9	6

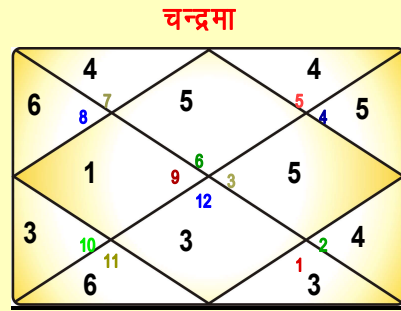
अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

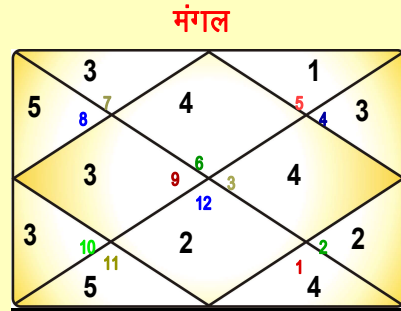
सूर्य													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
बृह	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
क्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
वध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
द्रमा	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48



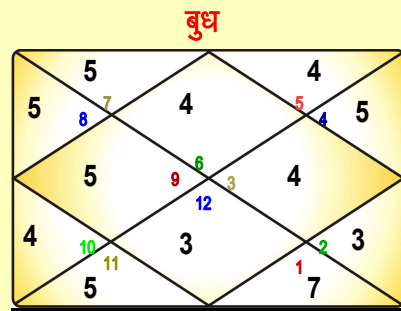
चन्द्रमा													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
बृह	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
क्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
वध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
द्रमा	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग	3	4	5	5	4	5	4	6	1	3	6	3	49



मंगल													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
बृह	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
क्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
वध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39



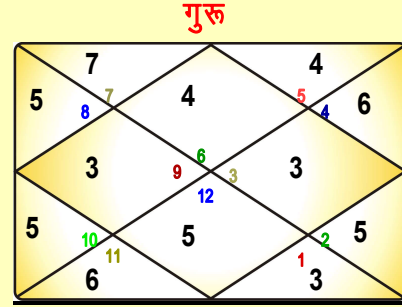
बुध													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
बृह	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
क्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
वध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
द्रमा	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54



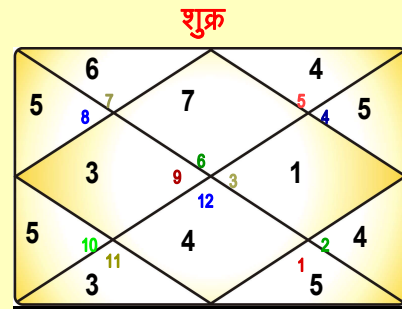
अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

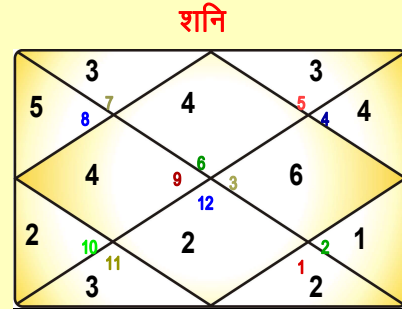
गुरु												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
बृह	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
क्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
वध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
द्रमा	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
योग	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	56



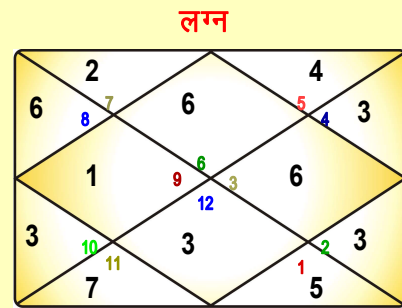
शुक्र												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
बृह	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	3
क्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	9
वध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	5
द्रमा	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
योग	5	4	1	5	4	7	6	5	3	5	3	52



शनि												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
बृह	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
क्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	3
वध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6
द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
योग	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	39



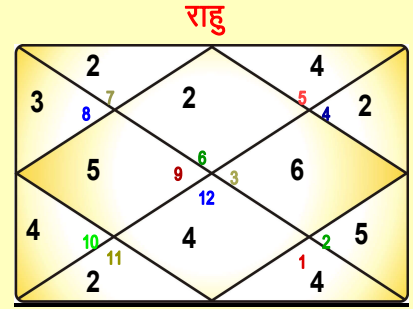
लग्न												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
बृह	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
क्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
वध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
द्रमा	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
योग	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	49



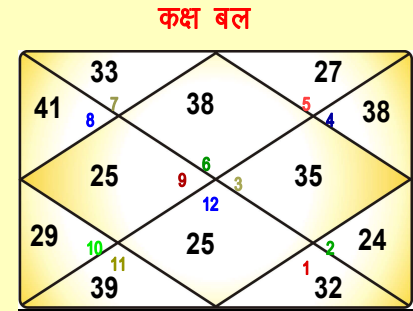
अष्टकवर्ग सिद्धान्त – भिन्नाष्टक वर्ग

आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

राहु												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शुक्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	1
बृह0	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	0	1
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	1
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0
क्रि	0	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0
वध	0	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0
द्रमा	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0
योग	4	5	6	2	4	2	2	3	5	4	2	4



कक्ष बल												
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शुक्र	7	1	4	2	5	5	4	4	3	4	4	5
बृह0	3	4	5	3	4	3	5	8	3	3	3	1
मंगल	5	5	4	5	2	4	4	4	4	7	8	2
सूर्य	2	4	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4
क्रि	4	5	4	2	4	5	3	6	3	3	4	4
वध	7	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6
द्रमा	2	2	4	8	2	2	3	6	2	2	6	2
लग्न	2	2	7	8	1	5	3	6	5	2	7	1
योग	32	24	35	38	27	38	33	41	25	29	39	25

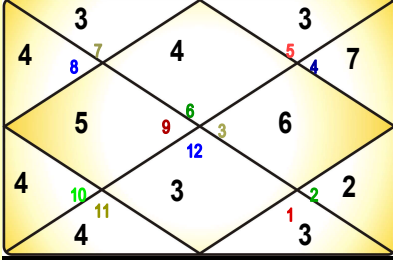


अष्टकवर्ग सिद्धान्त – त्रिकोन एवम् एकाधिपत्य शोधन

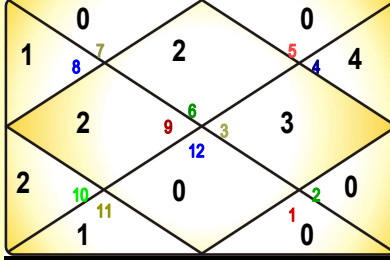
आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

सूर्य

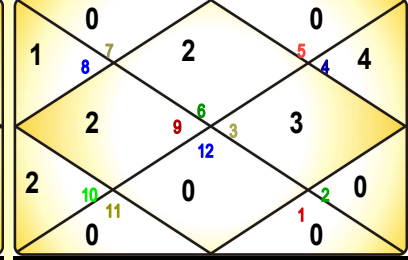
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड

86

ग्रह पिण्ड

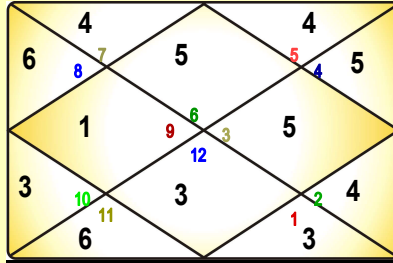
74

शुद्ध पिण्ड

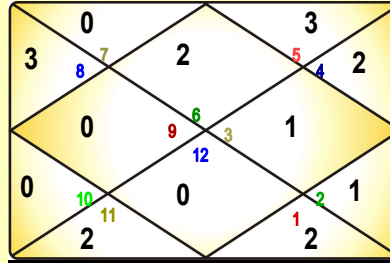
160

चन्द्रमा

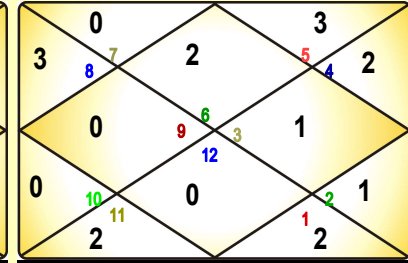
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड

126

ग्रह पिण्ड

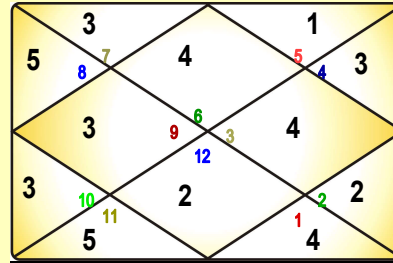
46

शुद्ध पिण्ड

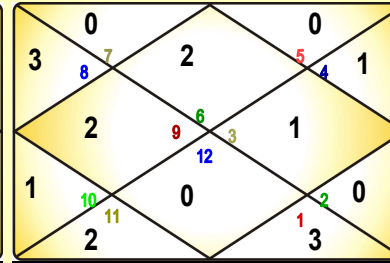
172

मंगल

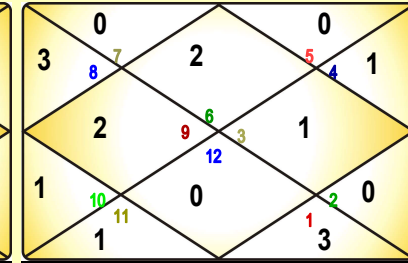
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड

101

ग्रह पिण्ड

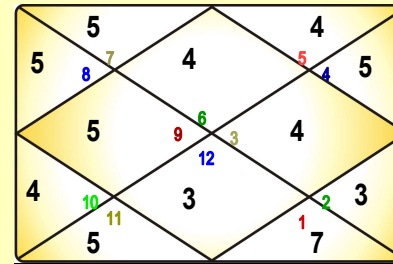
81

शुद्ध पिण्ड

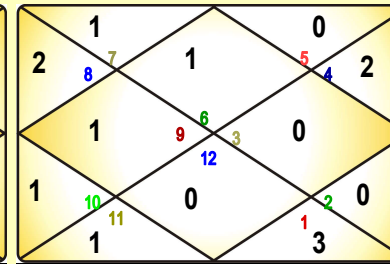
182

बुध

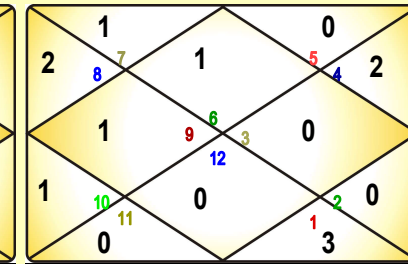
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड

71

ग्रह पिण्ड

61

शुद्ध पिण्ड

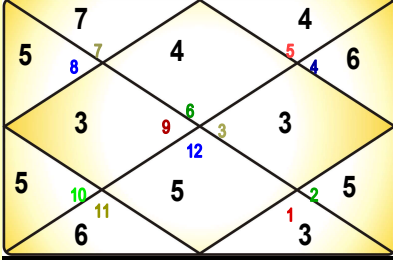
132

अष्टकवर्ग सिद्धान्त – त्रिकोन एवम् एकाधिपत्य शोधन

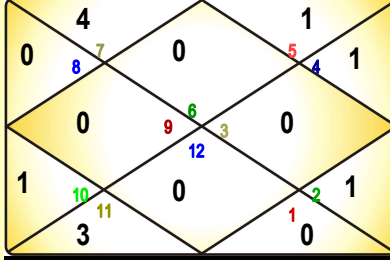
आधार – लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त – (परासर)

गुरु

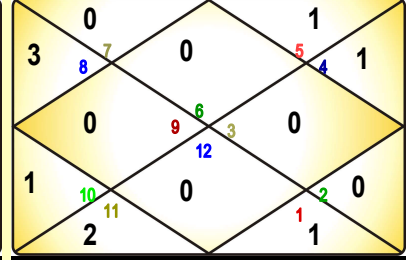
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



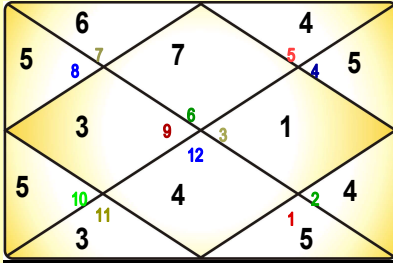
राशि पिण्ड 72

ग्रह पिण्ड 40

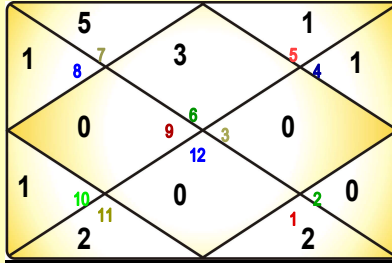
शुद्ध पिण्ड 112

शुक्र

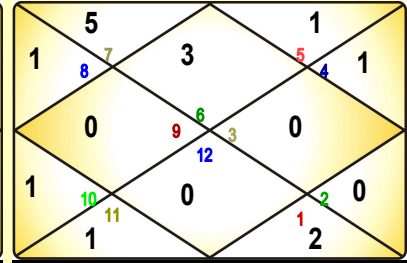
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



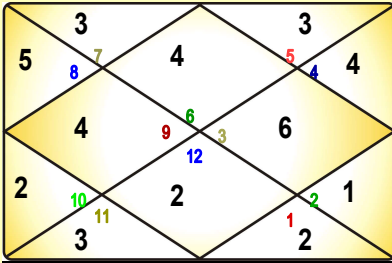
राशि पिण्ड 102

ग्रह पिण्ड 53

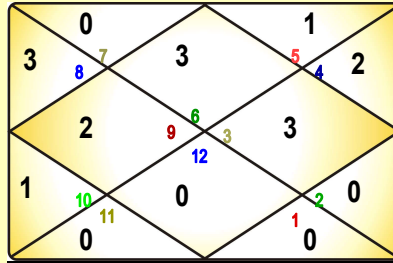
शुद्ध पिण्ड 155

शनि

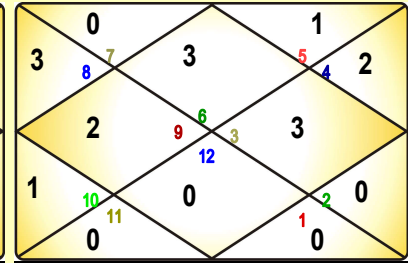
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



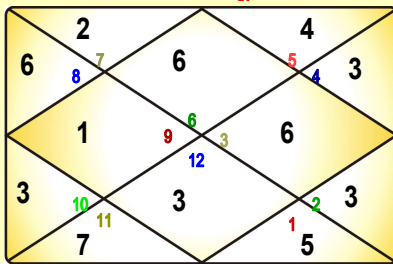
राशि पिण्ड 104

ग्रह पिण्ड 72

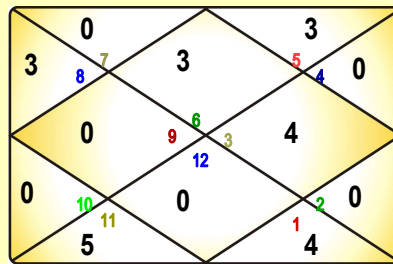
शुद्ध पिण्ड 176

लग्न

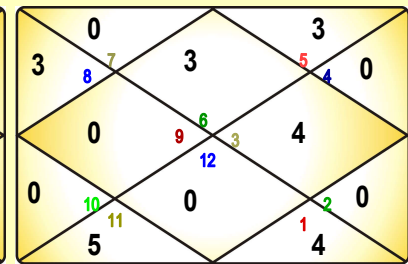
शोधन से पूर्व



त्रिकोन शोधन



एकाधिपत्य शोधन



राशि पिण्ड 184

ग्रह पिण्ड 82

शुद्ध पिण्ड 266

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
बृहस्पति	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
मंगल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
शुक	5	4	1	5	4	7	6	5	3	5	3	4	52
बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	1	3	6	3	49
योग	27	21	29	35	23	32	31	35	24	26	32	22	337
लग्न	5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49
राहु	4	5	6	2	4	2	2	3	5	4	2	4	43

तत्व चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	74	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	92	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	92	उत्तर

(विशेष- सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उप०, दप०, उप० और दप०) होगी।)

भुवन चक्र

स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव-राशि	112.33	107	मेहनत और लगन
पनफरा भाव-राशि	112.33	119	आर्थिक स्थिति
अपविल्म भाव-राशि	112.33	111	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	स० व० बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु -बान्धवों से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	92	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	92	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	74	दुर्भाग्य और हानि

सर्वाष्टकवर्ग योग

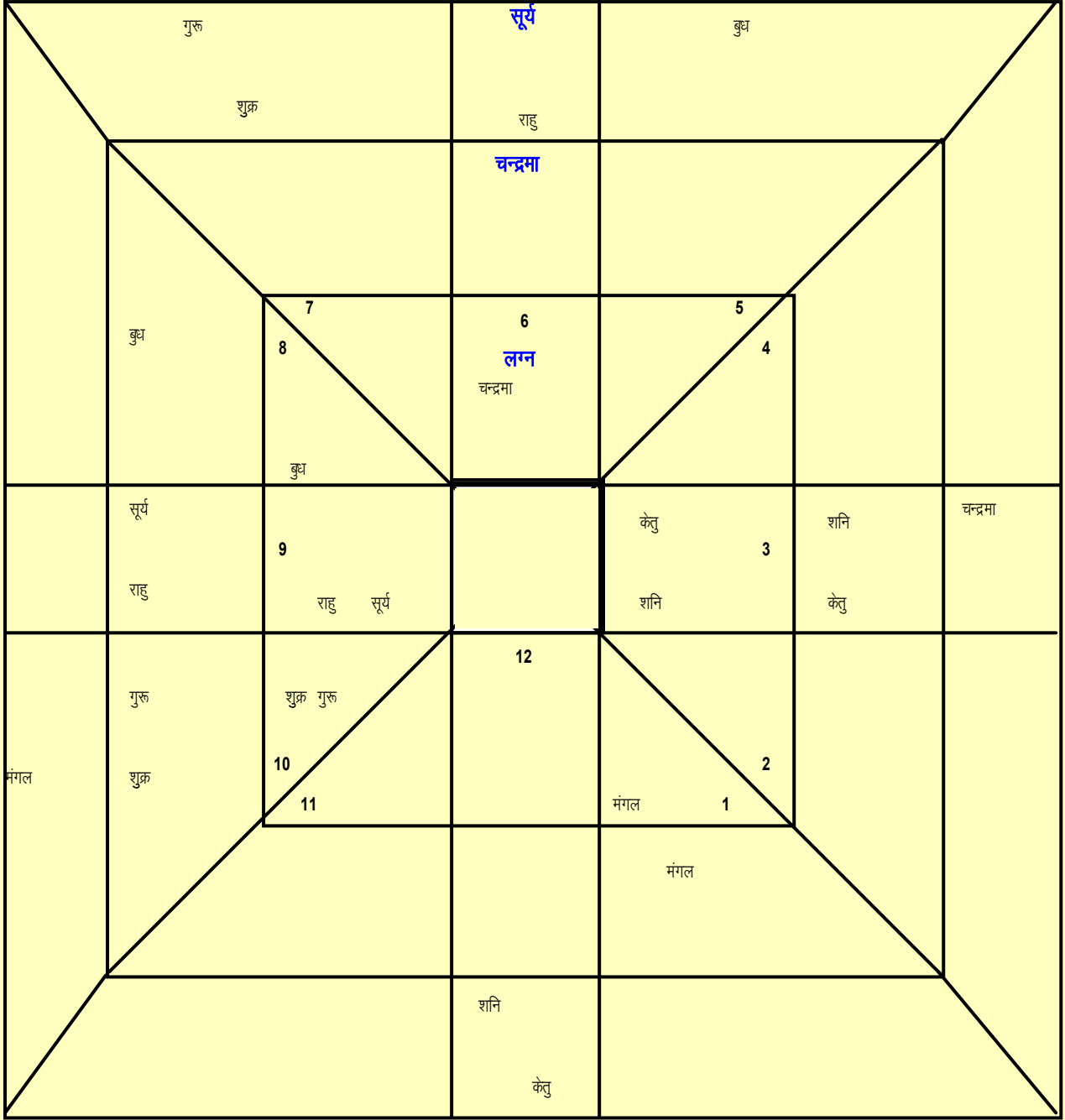
दमरुक योग : आपकी जन्म कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग के मध्य भाग (पाँचवीं से आठवीं भाव राशि तक) में सबसे कम शुभ बिन्दु हैं, इस कारण आपकी कुण्डली में दमरुक योग है। आप अपने जीवन के दूसरे चरण (लगभग 24 से 48 वर्ष) की अपेक्षा पहले चरण (24 वर्ष तक) और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72 वर्ष) में अधिक समृद्ध रहेंगे।

सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110

1/13/25/37/49/61/73/85/97/109

12/24/36/48/60/72/84/96/108/120



6/18/30/42/54/66/78/90/102/114

7/19/31/43/55/67/79/91/103/115

8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र बुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होंगे।
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सूर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगौ राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत् ॥

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह सिंह	07:09:1977 15:03:1980	04:11:1979 27:07:1980	2 y.1 m.27 d. 0 y.4 m.12 d.	ताम्र
द्वितीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या कन्या	04:11:1979 27:07:1980	15:03:1980 06:10:1982	0 y.4 m.10 d. 2 y.2 m.10 d.	स्वर्ण
तृतीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला तुला	06:10:1982 01:06:1985	21:12:1984 17:09:1985	2 y.2 m.15 d. 0 y.3 m.17 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु धनु	17:12:1987 20:06:1990	21:03:1990 15:12:1990	2 y.3 m.3 d. 0 y.5 m.26 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	ताम्र
शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह सिंह	01:11:2006 16:07:2007	10:01:2007 10:09:2009	0 y.2 m.9 d. 2 y.1 m.25 d.	ताम्र
द्वितीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या कन्या	10:09:2009 16:05:2012	15:11:2011 04:08:2012	2 y.2 m.5 d. 0 y.2 m.19 d.	स्वर्ण
तृतीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला तुला	15:11:2011 04:08:2012	16:05:2012 02:11:2014	0 y.6 m.0 d. 2 y.2 m.28 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु धनु	26:01:2017 26:10:2017	21:06:2017 24:01:2020	0 y.4 m.24 d. 2 y.2 m.29 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष मेष	03:06:2027 23:02:2028	20:10:2027 08:08:2029	0 y.4 m.17 d. 1 y.5 m.14 d.	ताम्र
शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र					
साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिंह सिंह	27:08:2036 05:04:2039	22:10:2038 13:07:2039	2 y.1 m.25 d. 0 y.3 m.8 d.	ताम्र
द्वितीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या कन्या	22:10:2038 13:07:2039	05:04:2039 28:01:2041	0 y.5 m.13 d. 1 y.6 m.16 d.	स्वर्ण
तृतीय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला तुला	28:01:2041 26:09:2041	06:02:2041 12:12:2043	0 y.0 m.9 d. 2 y.2 m.16 d.	रूपया
कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु धनु	08:12:2046 10:07:2049	06:03:2049 04:12:2049	2 y.2 m.27 d. 0 y.4 m.25 d.	ताम्र
अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 0२३:२६:३६) : चन्द्रमा : 5 व. 5 मा.
26 दि.

क्र० सं०	ग्रह दशा	अवधि	से ----- तक
1	चन्द्रमा महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
2	मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
3	राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
4	गुरु महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
5	शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
6	बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
7	केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
8	शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
9	सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्रमा दशा		मंगल दशा		राहु दशा	
अन्तर्दशा	से --- तक	अन्तर्दशा	से --- तक	अन्तर्दशा	से --- तक
चन्द्रमा		मंगल	14:06:1979 - 10:11:1979	राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
मंगल		राहु	10:11:1979 - 28:11:1980	गुरु	24:02:1989 - 20:07:1991
राहु		गुरु	28:11:1980 - 04:11:1981	शनि	20:07:1991 - 27:05:1994
गुरु		शनि	04:11:1981 - 13:12:1982	बुध	27:05:1994 - 13:12:1996
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975	बुध	13:12:1982 - 10:12:1983	केतु	13:12:1996 - 01:01:1998
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976	केतु	10:12:1983 - 08:05:1984	शुक्र	01:01:1998 - 01:01:2001
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977	शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985	सूर्य	01:01:2001 - 25:11:2001
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978	सूर्य	08:07:1985 - 13:11:1985	चन्द्रमा	25:11:2001 - 27:05:2003
सूर्य	13:12:1978 - 14:06:1979	चन्द्रमा	13:11:1985 - 14:06:1986	मंगल	27:05:2003 - 13:06:2004
गुरु दशा		शनि दशा		बुध दशा	
अन्तर्दशा	से --- तक	अन्तर्दशा	से --- तक	अन्तर्दशा	से --- तक
गुरु	13:06:2004 - 01:08:2006	शनि	13:06:2020 - 17:06:2023	बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009	बुध	17:06:2023 - 24:02:2026	केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011	केतु	24:02:2026 - 05:04:2027	शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012	शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030	सूर्य	07:09:2045 - 14:07:2046
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014	सूर्य	05:06:2030 - 17:05:2031	चन्द्रमा	14:07:2046 - 13:12:2047
सूर्य	25:12:2014 - 13:10:2015	चन्द्रमा	17:05:2031 - 16:12:2032	मंगल	13:12:2047 - 10:12:2048
चन्द्रमा	13:10:2015 - 12:02:2017	मंगल	16:12:2032 - 25:01:2034	राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
मंगल	12:02:2017 - 19:01:2018	राहु	25:01:2034 - 01:12:2036	गुरु	29:06:2051 - 04:10:2053
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020	गुरु	01:12:2036 - 14:06:2039	शनि	04:10:2053 - 13:06:2056
केतु दशा		शुक्र दशा		सूर्य दशा	
अन्तर्दशा	से --- तक	अन्तर्दशा	से --- तक	अन्तर्दशा	से --- तक
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056	शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066	सूर्य	14:06:2083 - 01:10:2083
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058	सूर्य	13:10:2066 - 13:10:2067	चन्द्रमा	01:10:2083 - 01:04:2084
सूर्य	10:01:2058 - 17:05:2058	चन्द्रमा	13:10:2067 - 14:06:2069	मंगल	01:04:2084 - 07:08:2084
चन्द्रमा	17:05:2058 - 16:12:2058	मंगल	14:06:2069 - 14:08:2070	राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
मंगल	16:12:2058 - 14:05:2059	राहु	14:08:2070 - 14:08:2073	गुरु	02:07:2085 - 20:04:2086
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060	गुरु	14:08:2073 - 13:04:2076	शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
गुरु	01:06:2060 - 08:05:2061	शनि	13:04:2076 - 14:06:2079	बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062	बुध	14:06:2079 - 14:04:2082	केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063	केतु	14:04:2082 - 14:06:2083	शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

विंशोत्तरी दशा

गुरु महादशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

गुरु अन्तर्दशा		शनि अन्तर्दशा		बुध अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
गुरु	13:06:2004	शनि	01:08:2006	बुध	12:02:2009
शनि	25:09:2004	बुध	26:12:2006	केतु	09:06:2009
बुध	27:01:2005	केतु	06:05:2007	शुक्र	28:07:2009
केतु	17:05:2005	शुक्र	29:06:2007	सूर्य	12:12:2009
शुक्र	02:07:2005	सूर्य	30:11:2007	चन्द्रमा	23:01:2010
सूर्य	08:11:2005	चन्द्रमा	15:01:2008	मंगल	02:04:2010
चन्द्रमा	17:12:2005	मंगल	01:04:2008	राह	20:05:2010
मंगल	20:02:2006	राह	26:05:2008	गुरु	21:09:2010
राह	07:04:2006	गुरु	12:10:2008	शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा		शुक्र अन्तर्दशा		सूर्य अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
केतु	20:05:2011	शुक्र	25:04:2012	सूर्य	25:12:2014
शुक्र	09:06:2011	सूर्य	05:10:2012	चन्द्रमा	09:01:2015
सूर्य	05:08:2011	चन्द्रमा	23:11:2012	मंगल	02:02:2015
चन्द्रमा	22:08:2011	मंगल	12:02:2013	राह	19:02:2015
मंगल	20:09:2011	राह	10:04:2013	गुरु	04:04:2015
राह	09:10:2011	गुरु	03:09:2013	शनि	13:05:2015
गुरु	29:11:2011	शनि	11:01:2014	बुध	28:06:2015
शनि	14:01:2012	बुध	14:06:2014	केतु	09:08:2015
बुध	08:03:2012	केतु	30:10:2014	शुक्र	26:08:2015

चन्द्रमा अन्तर्दशा		मंगल अन्तर्दशा		राहु अन्तर्दशा	
प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -	प्रत्यन्तर्दशा	से -
चन्द्रमा	13:10:2015	मंगल	12:02:2017	राह	19:01:2018
मंगल	23:11:2015	राह	04:03:2017	गुरु	30:05:2018
राह	21:12:2015	गुरु	24:04:2017	शनि	24:09:2018
गुरु	04:03:2016	शनि	08:06:2017	बुध	10:02:2019
शनि	08:05:2016	बुध	01:08:2017	केतु	14:06:2019
बुध	24:07:2016	केतु	19:09:2017	शुक्र	04:08:2019
केतु	01:10:2016	शुक्र	09:10:2017	सूर्य	28:12:2019
शुक्र	29:10:2016	सूर्य	04:12:2017	चन्द्रमा	10:02:2020
सूर्य	19:01:2017	चन्द्रमा	21:12:2017	मंगल	23:04:2020

सर्व ग्रह दोष और उपाय सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय



सपात सूर्य दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रुद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घीमें दूब को डूबोकर त्र्यम्बकमंत्र से 28 या 108 आहृतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

- 1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
- 2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
- 3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से दूर रहें।
- 4- अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय



यदि आपका जन्म आपके अपने भाई-बहनों अथवा अपने माता-पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख-शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ-सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लगन हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष –

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ-साथ रुद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चन्द्र दोष –

यदि आपका जन्म कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी-कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमदुम योग दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा-धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस-मदिरा का सेवन ना करें।

- 1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
- 2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
- 3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से बचना चाहिए।
- 4- अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय



आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में बैठा हुआ है। आप स्वभाव से उग्र और तानाशाह हो सकते हैं। विपरीत लिंग वाले आपके प्रति खास आकर्षण महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपका उनसे किसी कारणवश अलगाव भी हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप

करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार-बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बातना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रुद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रुद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रुद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय



आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। आप चालाक एवं झगड़ालू स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके मित्र स्वार्थी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, छठे या बारहवें भाव में स्थित है। आपमें संकोच और निराशा की भावना कभी-कभी बहुत ही ज्यादा हो सकती है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुललाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आपबुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों-फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतलामाता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्रत्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

- 1- बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
- 2- अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
- 3- किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

गुरु से संबंधित दोष और उनके उपाय



आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। आपमें धैर्य एवं बुद्धि की कमी हो सकती है। पर्याप्त मेहनत के बावजूद आपको उचित सफलता नहीं मिल सकती है। भाई-बन्धुओं से प्रेम एवं सहयोग की कमी हो सकती है। विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। आपमें अपना भला बुरा समझने की समझ कम हो सकती है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम-धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह-शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते-बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

गुरु ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी

से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

- 1- शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु-संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
- 2- कोर्ट-कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय



आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजनकर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति कोशिव-पार्वती या विष्णु-लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम-वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रुझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रातमें सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठकरना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार-बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

- 1- अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
- 2- कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय



आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। आपकेसिर या मस्तिष्क में किसी तरह के विकार होने की संभावना है। अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट प्राप्त हो सकता है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार-बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ-सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

उपयुक्त रत्न का सुझाव

लग्नाधिपति के लिए रत्न



लग्नाधिपति (लग्न का स्वामी) – बुध

आपका लग्नेश बुध है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप बुध के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

बुध के लिए रत्न



पन्ना की भौतिक संरचना

पन्ना एक काफी आकर्षक रत्न है। पन्ना काफी कठोर होता है, लेकिन इसे आसानी से काटा जा सकता है। यह गहरा एवं चमकदार हरा रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, प्रकृति के प्रति प्रेम, खुशहाली एवं आनन्द का सूचक है। हरा जेड, पेरिडोट, हरा तुरमली, सवोराइट, हरा डायोप्साइड इत्यादि पन्ना के ऊपरत्न हैं।

पन्ना धारण करने के फायदे

पन्ना धारण करने से सफलता, सौभाग्य एवं खुशहाली प्राप्त होती है। इससे बुद्धि तीव्र होती है तथा सीखनेकी योग्यता, दूरदर्शिता, स्मरण शक्ति, विश्वास, अन्तर्दृष्टि एवं सूक्ष्म-दृष्टि का विकास होता है। पन्ना धारण करना स्वास्थ्य- विशेषकर तंत्रिका एवं आंखों के लिए लाभदायक होता है। इससे विषयवस्तु के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति में मदद मिलती है। यह विषेले जीवों एवं ईर्ष्यालू व्यक्तियों के भय से बचाता है। पन्ना

जहर का नाश एवं पाचन में मदद करता है। पन्ना धारक को प्रेत साया से दूर रखता है एवं पापों से मुक्तिदिलाता है। पन्ना धारण करने से अन्न, धन, सम्पत्ति एवं वंश में वृद्धि होती है।

रोगों पर पन्ना का प्रभाव

पन्ना धारण करने या पन्ना की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं— पथरी, गुदा की गांठ, बहुमूत्र, खून गिरना, बवासीर, पित्त ज्वर, ज्वर, खांसी, गुर्दे का विकार, रक्त-विकार, आधासीसी इत्यादि।

पन्ना धारण करने के नियम



बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित पन्ना ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। पन्ना सोने से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। पन्ना इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। पन्ना का वजन 3-7 कैरेट (3-7 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। यदि बुध मिथुन या कन्या राशि में हो या अश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्र में हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवमांश में बुध स्थित हो तो बुधवार के दिन सूर्योदय से लेकर दो घंटे बाद सोने की अंगूठी में पन्ना जड़वाकर धारण करना चाहिए।

बुधवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे के बाद नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईया चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले बुध देवता के बीज मंत्र का 9 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋग्वेद मंत्र का एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त बुध अष्टोत्तर शतनामावली (बुध ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसकेउपरांत बुध देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

पन्ना दान की विधि

पन्ना यंत्र

9	4	11
10	8	6
5	12	7

चांदी के पत्र पर यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में पन्ना जड़वाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर बुध मंत्र सेपन्ने को बुधवार के दिन अभिमंत्रित करें। 64 दिन तक लगातार उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए यंत्र की विधिवत् पूजा करते रहें। तत्पश्चात्, सोना, मूंगा, कांस्य, घी, शक्कर, कपूर, हरा वस्त्र, हाथी दांत, एवं दक्षिणासहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। बुधवार के दिन 10 बजे तक इस दान को करने से श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

पन्ना के प्रभाव की अवधि

अंगुठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 3 वर्ष तक पन्ना प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद पन्ना का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः उपरोक्त अवधि के बाद पन्ना बदल देना चाहिए।

नवमेश के लिए रत्न



नवमेश- शुक

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्नधारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

योग-कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्राकृतिक योग—कारक ग्रह नहीं है।

तात्कालिक योग-कारक ग्रह के लिए रत्न



तात्कालिक योग-कारक ग्रह – शनि

शनि ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में तात्कालिक योग—कारक ग्रह है। चूंकि तात्कालिक योग-कारक ग्रह ना तो उच्चस्थ है, ना ही नीचस्थ है और ना ही अपने भाव में उपस्थित है। अतः आप शनि ग्रह के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

शनि के लिए रत्न



नीलम की भौतिक संरचना

नीलम एक काफी आकर्षक रत्न है। यह अपने सौन्दर्य, आकर्षक रंग, पारदर्शिता, प्रतिरोधक शक्ति एवं स्थायित्व के लिए जाना जाता है। यह नीले रंग में पाया जाता है। यह सामंजस्य, सहानुभूति, मित्रता, भरोसा एवं वफादारी का सूचक है। तंजेनाइट, नीला स्पाइनल, जम्बुमणि इत्यादि नीलम के ऊपरत्न हैं।

नीलम धारण करने के फायदे

नीलम धारण करने से सफलता, सौभाग्य, खुशहाली प्राप्त होती है। यह जीवन में स्थायीत्व प्रदान करता है। नीलम दूसरों की ईर्ष्या एवं कुदृष्टि से बचाता है। यात्रा के दौरान आने वाले खतरों को दूर करता है। स्वास्थ्य लाभ एवं मानसिक अशांति या मानसिक बीमारियों को दूर करने में नीलम काफी सहायक होता है। नीलम रचनात्मक कार्यों, अन्तर्दृष्टि एवं ध्यान को प्रेरित करता है। नीलम जुकाम एवं पित्तदोष में लाभदायक होता है तथा शनि के प्रकोप से बचाता है। नीलम धारण करने से धारक दीर्घायु होता है एवं सम्मान, यश, ज्ञान एवं धन-सम्पत्ति प्राप्त करता है। नीलम सत्तापक्ष से सम्मान दिलवाता है, दुश्मनों से रक्षाकरता है एवं मोह-माया को दूर करता है।

रोगों पर नीलम का प्रभाव

नीलम धारण करने या औषधि के रूप में सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं— नेत्र रोग, मुंह से खून आना, दिमाग की गर्मी, हिचकी, पागलपन, खांसी, ज्वर, उपदंश, अजीर्ण, विषमज्वर इत्यादि।

नीलम धारण करने के नियम



बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित नीलम ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोत्तरी होगी। नीलम सोना, चांदी या लोहे से बनी अंगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। नीलम इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए अंगूठी में धारण करना ज्यादा लाभदायक होगा। नीलम का वजन 3-7 कैरेट (कम से कम 4 रत्ती) होना चाहिए। पुरुषों को दायें हाथ में धारण करना चाहिए। जब शनि मकर अथवा कुम्भ राशि में हो या तुला राशि में उच्चस्थ हो या शनिवार को उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, उस दिन नीलम सोना, चांदी या लोहे में जड़वाकर धारण करें।

शनिवार के दिन सूर्योदय से दो घंटे चालीस मिनट पहले नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईयां चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले शनि देवता के बीज मंत्र का 23 बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋग्वेद मंत्र का

एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त शनि अष्टोत्तर शतनामावली (शनि ग्रह के 108 नाम) का जाप करें। इसके उपरांत शनि देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

नीलम दान की विधि

नीलम यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

रांगा, सीसा या लोहे के पत्र पर शनि यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में नीलम जड़वाकर उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर शनि मंत्र से नीलम को शनिवार के दिन अभिमंत्रित करें। मध्याह्न काल में दीप बलि दें। तपश्चात् लोहा, उड़द, सरसों का तेल, भैंस, उपानह, काला वस्त्र एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस प्रकार दान करने से शनि से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं एवं मनोकामना पूर्ण होती है।

नीलम के प्रभाव की अवधि

अंगूठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर 5 वर्ष तक नीलम प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद नीलम का प्रभाव नष्ट हो जाता है। अतः 5 वर्ष के बाद नीलम बदल देना चाहिए।

कन्या लग्न के लिए रत्नों का चुनाव

अपनी समस्याओं या कष्टों से निजात पाने के लिए या भाग्योदय के लिए या शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आवश्यकतानुसार रत्न धारण करें।

माणिक रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में सूर्य व्यय भाव का स्वामी है। माणिक धारण करना आपके लिए अशुभ हो सकता है।

मोती रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में चंद्रमा ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर मिश्रित फल प्रदान करेगा। आपको मोती धारण करने से बहुत अधिक शुभ फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कारक ग्रह नहीं है। योग्य ज्योतिषी की सलाह से ही मोती धारण करें।

यदि आप मानसिक रूप से अशांत रहते हों या सर्दी-कफ आदि से ग्रसित रहते हों या शरीर में कैल्सियमकी कमी हो और आपकी कुण्डली में चंद्रमा पापी ग्रह राहु एवं शनि के साथ स्थित नहीं हो तो मोती धारण करने से लाभ होगा।

मूंगा रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में मंगल तीसरे एवं आठवें भाव का स्वामी है। आपको मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

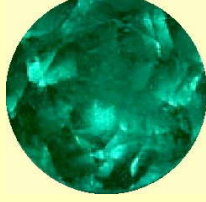
यदि आप रक्त, मांस, मज्जा आदि से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। मूंगा ना धारण करना ही आपके लिए बेहतर

होगा ।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष लागू हो रहा है। आपको मूंगा धारण करना चाहिए।

पन्ना रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में बुध पहले भाव एवं दसवें भाव का स्वामी है। पन्ना धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

यदि आप बौद्धिक विकृति, विवेक में कमी, शिक्षा प्राप्ति में बाधा, मानसिक रोग, मिर्गी, पागलपन या वाणी दोष से ग्रसित हैं, तो आपको पन्ना धारण करना चाहिए।

पुखराज रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में गुरु चौथे एवं सातवें भाव का स्वामी है। पुखराज धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आप कपास, वस्त्र, साहित्य आदि से जुड़ा कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपके लिए पुखराज धारण करना लाभदायक रहेगा।

आपकी कुण्डली में गुरु लग्नेश बुध से शत्रुता रखता है। अतः किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के बाद ही पुखराज धारण करें।

यदि आपके विवाह में बाधा आ रही है या विवाह में देरी हो रही है या वैवाहिक जीवन में बाधा आ रही है, तो आपको गहरे पीले रंग का पुखराज धारण करना चाहिए।

हीरा रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में शुक्र दूसरे एवं भाग्य भाव का स्वामी है। विपरीत परिस्थितियों में शुभ फल प्राप्त करने के लिए आपको हीरा धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र भाग्य भाव का स्वामी है। हीरा धारण करना आपके लिए लाभदायक होगा।

यदि आपके विवाह में कोई बाधा आ रही है या विवाह में देरी हो रही है या विवाह पश्चात वैवाहिक जीवनमें तनाव हो रहा है या स्त्री-सुख प्राप्त नहीं हो रहा हो, तो आपको हीरा धारण करना चाहिए।

यदि आप खाद्य पदार्थ, रस, फल, कास्मेटिक्स आदि का व्यवसाय करते हैं, तो आपके लिए हीरा धारण करना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र, बुध या शनि के साथ स्थित नहीं है। यदि आप यौन रोगों या गुप्त रोगों से पीड़ित हैं तो आपको हीरा धारण करने से लाभ होगा।

नीलम रत्न धारण करने के लिए सुझाव



आपकी कुण्डली में शनि पांचवें एवं छठे भाव का स्वामी है। आपको नीलम धारण करने से लाभ होगा।

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के शुरू होने पर नीलम अवश्य धारण करें।

आपकी कुण्डली में नौवें, दसवें या लग्न भाव पर शनि का प्रभाव है। आपको नीलम धारण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में लग्नेश शनि का मित्र ग्रह है। रोग, शत्रु, शिक्षा, संतान, वाणी आदि से संबंधित शुभ फलों के लिए आप नीलम धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न धारण करने के लिए सुझाव



राहु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः राहु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर शनि की स्थिति देखकर किया जाता है।

जन्मकुण्डली में शनि के स्थिति के अनुसार गोमेद धारण करना चाहिए, अन्यथा हानि भी हो सकती है।

आपकी कुण्डली में राहु केन्द्र भाव (1, 4, 7, 10) या त्रिकोण भाव (5, 9) में स्थित है। यदि आप

सार्वजनिक जीवन में पद सम्मान, ख्याति प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपके लिए गोमेद धारण करना लाभदायक रहेगा।

आपकी राशि मेष, वृश्चिक या धनु नहीं है। आपके लिए गोमेद धारण करना लाभदायक होगा।

लहसुनियों रत्न धारण करने के लिए सुझाव



केतु किसी विशेष राशि का स्वामी नहीं होता है, अतः केतु की शुभता एवं अशुभता का विचार जन्मकुण्डली में केतु की स्थिति (भाव एवं राशि) के आधार पर किया जाता है।

लहसुनिया बिना किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह के ना पहनें। लहसुनिया अत्यंत कम समय के लिए धारण किया जाता है। लाभदायक परिणाम प्राप्त होने के बाद इसे विसर्जित कर देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु लग्न एवं चंद्रमा दोनों से केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

यदि आप किसी अज्ञात भय, चोट आतंक, दुर्घटना, कलंक आदि की संभावना से परेशान हैं या किसी प्रकारके मानसिक रोग से ग्रस्त हैं, तो आपको लहसुनिया धारण करना चाहिए।

आपकी राशि वृष, मिथुन या कर्क है और केतु छठे, आठवें, दसवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको लहसुनिया धारण नहीं करना चाहिए।

ज्योतिषीय परामर्श –

यदि आप कालसर्प दोष, ब्रह्म दोष, मातृ, पितृ, भातृ, स्त्री दोष आदि से अशुभ फल प्राप्त कर रहे हैं या दुख, दरिद्रता, कष्ट, अपमान, रोग, शत्रु, कर्ज आदि से लम्बे समय से परेशान है, तो आप तीन रत्नों का लॉकेट या अंगूठी सोने या चांदी में बनवाकर एक साथ धारण कर सकते हैं।

लाकेट –



1- पन्ना, 2- नीलम, 3- हीरा।

अंगूठी -

- 1- हीरा (तर्जनी में)
- 2- नीलम (मध्यमा में)
- 3- पन्ना (कनिष्ठिका में)



अन्य महत्वपूर्ण सुझाव -

- 1- भाग्यवर्द्धक रत्न- हीरा।
- 2- कार्य व्यवसाय, नौकरी, धनदायक रत्न- पन्ना।
- 3- संतान, शिक्षा, ख्यातिदायक रत्न- नीलम।
- 4- भीषण कष्ट, रोग, शत्रु या हानिकारक रत्न- मूंगा, माणिक।

सूर्य ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।



भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणस्रचिर्यः सिंहराशीरवरः
षट्त्रिंस्थो दश शोभनो गुस्त्राशीभौमेषु मित्र सदा ।
शुक्रो मंदरिपुकलिङ्गजनितश्चाऽग्नीरवरो देवता
मध्येवर्तुलपूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

सूर्य ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत सूर्य का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य धनु राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य मित्र राशि में सुव्यवस्थित है, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप चौड़े गठन की भव्य और प्रभावी शारीरिक संरचना से पूर्ण होंगे। आप बहुत उत्साही, उर्जावान और सदा आशावादी होंगे। आप एक विद्वान, बुद्धिमान और विवेकी व्यक्ति होंगे, लोग आपके विचारों और मतों को मान तथा महत्व देंगे और आपको बहुत सम्मान देंगे। आप बड़ों एवं सदाचारी लोगों का आदर करेंगे तथा धर्म व ईश्वर में आस्था रखेंगे। यद्यपि आप अन्दर से शांतिप्रिय होंगे, फिर भी सुरक्षा के उद्देश्य से आपकी मार्शल आर्ट में महारत हासिल करने में बहुत रुचि हो सकती है, आप अपनी विद्वता की कुशलता से उपयोग ईमानदार योग्य लोगों को उचित प्रशिक्षण देने में कर सकते हैं। आपको अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त होगी और आप कई अनुयायियों की प्रेरणा का स्रोत होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न कन्या है, द्वादशेश सूर्य की चौथे

भाव में स्थिति कुछ मामलों में एक अनुकूल योग नहीं है। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण या खुशहाल नहीं हो सकता है। इसके अलावा परिवार के सदस्यों में विशेष मतभेद के कारण सम्पत्ति का बंटवारा या नुकसान हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव नहीं हैं, तो आपका परिवार अपना सम्मान खो सकता है— संभवतः आपके कुछ अविवेकपूर्ण कार्यों के कारण। आपकी शिक्षा बाधित हो सकती है और आपको अपना घर तथा पैतृक स्थान अचानक पारिस्थितिक बाधाओं के कारण छोड़ना पड़ सकता है।

सूर्य ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या तिथि का जन्म



यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान-सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नहीं हुआ है।

कार्तिक मास का जन्म

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस-पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म कार्तिक मास में नहीं हुआ है।

संक्रांति के दिन का जन्म

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्रांति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और

स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नहीं हुआ है।

सार्पशीर्ष में जन्म

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

सपात सूर्य दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटनाका भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रुद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यम्बक मंत्र से 28 या 108 आहृतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गए हैं।

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाटपर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

सूर्य ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी

है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

सूर्य ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री— खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी— बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

सूर्य को अर्घ्य देने की विधि एवं मंत्र



सूर्य को अर्घ्य देने से सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति होती है। इससे बुद्धि का विकास होता है, एवं कईप्रकार के लाभ होते हैं।

सूर्योदय के दौरान ताँबे के लोटे में जल भरकर उसमें लाल चंदन, लाल फूल, अक्षत एवं दूध आदि डालकरसूर्याभिमुख होकर अर्घ्य देना चाहिए। सबसे पहले सूर्य का ध्यान करते हुए निम्न विनियोग का जापकरें –

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो रमन्तु ।
धियो रमन्तु ॥
फिर सूर्य का आह्वान करके निम्न श्लोक का जाप करते हुए अर्घ्य दें –

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
करूणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

ध्यान मंत्र –

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि ।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतः कराब्जैर्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गुलिचिं त्रिनेत्रम् ॥

सूर्य नमस्कार



सूर्य नमस्कार मंत्र :

जपा कुसुम संकाशं कारयपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

सूर्य नमस्कार से आत्मा की शुद्धि होती है, मानसिक उलझनों एवं विघ्नों से मुक्ति मिलती है तथा उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं

करना चाहिए।

2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।

3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से दूर रहें।

4- अकारण ही क्रोध करने से बचें।

सूर्य ग्रह के लिए स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आपअपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

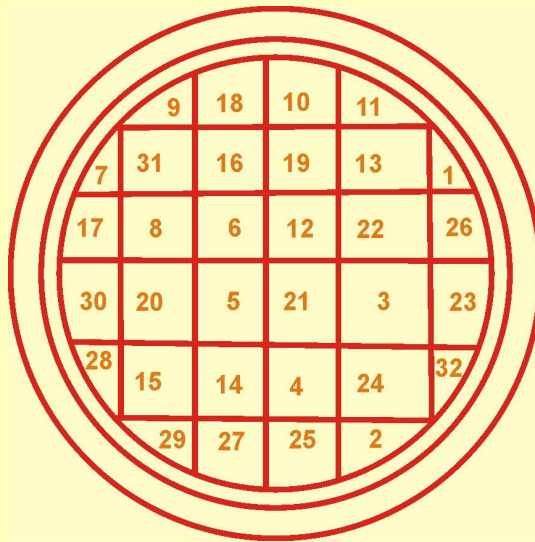
सूर्य ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने,चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

6	1	8
7	5	3
2	9	4

तांत्रिक यंत्र

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)



चन्द्रमा ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।



चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चत्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्यु माधीश्वरः ।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्को गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम ॥

चन्द्रमा ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई संबंधों में भाग्यशाली होंगे। आप सुन्दर रूप, आकर्षक व्यक्तित्व, ओजपूर्ण व्यवहार, मनोहारी स्वभाव और उदार प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप मृदुभाषी और दूसरों के प्रति वास्तविक करुणा रखने वाले होंगे। जीवन में आप बहुत विख्यात होंगे और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। आप विपरीत लिंग के अनुकूल लोगों की संगति के बहुत शौकीन होंगे। आपका विवाह फलदायी होगा, आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती हैं, आपका घरेलू जीवन बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। आपका धार्मिक रुझान बहुत उत्कृष्ट होगा, आप परम्पराओं का नियमित रूप से निर्वाहन करेंगे, अपेक्षाकृत कम आयु से प्रवचन सुनेंगे और पवित्र तीर्थों की यात्रा करेंगे।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है। इस कारण से आप एक सकारात्मक कल्पना और संवेदी

प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपको अन्तर्ज्ञान का उपहार प्राप्त होगा। आपकी प्रकृति शर्मिली हो सकती है, लेकिन आप कुछ हद तक अशांत और अस्थिर होंगे और आप कुछ बार अपना रोजगार तथा निवास स्थान बदल सकते हैं। यदि चंद्रमा कर्क राशि में स्थित है, तो आप अवश्य ही बहुत धनी होंगे, यदि चंद्रमा वृश्चिक राशि में है, तो आपको स्वास्थ्य की समस्याएँ हो सकती हैं और आप बहुत सुस्त हो सकते हैं। हांलाकि, यदि चंद्रमा वृषभ राशि में स्थित है, तो आपके परिवार के धन में बढ़ोत्तरी होगी, लेकिन आपको कुछ एक बार वाहन दुर्घटना का भय हो सकता है।

चन्द्रमा ग्रह से संबंधित दोष और उनके उपाय

एक नक्षत्र जन्म दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाईबहनों अथवा अपने मातापिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुखशांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ-सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रोंकी पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती हैकि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ-साथ रुद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चन्द्र दोष

यदि आपका जन्म कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी-कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुमयोग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष नहीं लागू हो रहा है।

नीच चंद्र दोष

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष नहीं लागू हो रहा है।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान-सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृत्ति ज्यादा हो सकती है।

आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष नहीं लागू हो रहा है।

गण्डमूल दोष

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष नहीं लागू हो रहा है।

नक्षत्र गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघानक्षत्र के शुरुआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

लग्न गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरुआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

तिथि गण्डांत दोष

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरुआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष नहीं लागू हो रहा है।

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा-धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस-मदिरा का सेवन ना करें।

- 1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
- 2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
- 3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से बचना चाहिए।
- 4- अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

चन्द्रमा ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मासमें शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्रमा के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिमसोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

चन्द्रमा ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

चन्द्रमा ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री— लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।

जड़ी — खिरनी की जड़।

चन्द्रमा ग्रह के लिए स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चाँदी, शंख, कपूर, छोटीइलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

चन्द्रमा ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

7	2	9
8	6	4
3	10	5

तांत्रिक यंत्र

40	39	24	38	23					
41	6	53	9	8	22				
15	37	16	45	1					
14	43	5	44	46	24				
36	17	52	18	28					
26	13	4	19	2	27				
7	34	33	20	29					
60	35	32	3	59	30				
42	12	21	31	11					
57	54	55	52	58	10	56	47	48	49

मंगल ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात ।



भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुचाऽर्कः राशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भास्वराजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

मंगल ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप सत्यवादी, उर्जावान, उत्साही, आशावादी, साहसी, वीर और ओजपूर्ण होंगे। आपकी बाहरी खेलों और साहसिक क्रियाकलापों में रुचि होगी और युद्ध एवं लड़ाई में आपको विशेष आनन्द मिलेगा। आपको पर्याप्तभौतिक सम्पत्तियां प्राप्त होंगी तथा आपका भविष्य काफी सुरक्षित होगा। आपको शक्तिशाली और प्रभावशाली लोगों से लाभ एवं सहयोग मिलेंगे एवं आप व्यवसाय के एक सम्मानित क्षेत्र से आय प्राप्त करेंगे— जैसे किसी भाग के प्रमुख, विभाग के प्रधान, प्रबंधक, नियंत्रक या निदेशक बनकर। सामाजिक रूप से आप बहुत विख्यात

होंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। यदि मंगल मेष या वृश्चिक राशि में स्थित है, तो आप दीर्घजीवी और कई मामलों में भाग्यशाली होंगे— विशेषकर विरासत के मामले में। यदि मंगल मकर राशि में स्थित है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे, लेकिन शत्रुओं के कारण आपको परेशानियां हो सकती हैं, आप किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने से बाल-बाल बच सकते हैं। यदि यह कर्क राशि में स्थित है, तो आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं और आपको शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है। यदि मंगल किसी अन्य राशि में स्थित है, तो यह आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य और सुख के लिए अनुकूल नहीं है तथा आपको शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भय हो सकता है।

भावगत/राशिगत मंगल का विशेष फल

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में बैठा हुआ है। आप स्वभाव से उग्र और तानाशाह हो सकते हैं। विपरीत लिंग वाले आपके प्रति खास आकर्षण महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपका उनसे किसी कारणवश अलगाव भी हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ॐ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार-बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रुद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रुद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रुद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

मंगल ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिकमंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त

होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

मंगल ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

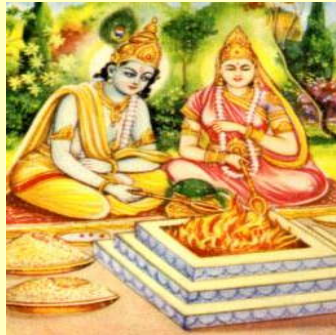


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिह्वा संगमुसी नाग जिह्वा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े मेंसिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है।

हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।

जड़ी- सौंफ की जड़, नाग जिह्वा, अनन्त मूल।

मंगल ग्रह के लिए स्नान और दान

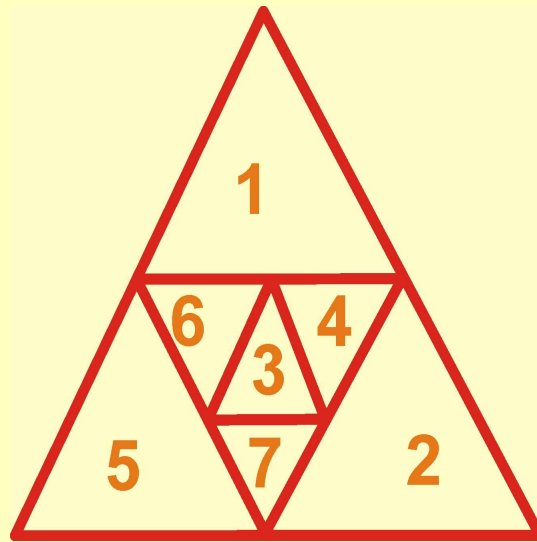
लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

मंगल ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

8	3	10
9	7	5
4	11	6

तांत्रिक यंत्र



बुध ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय

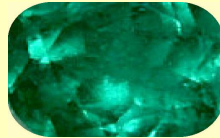


ओं चन्द्र पुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात् ।



सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो ।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः ॥
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो ।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

बुध ग्रह के लिए रत्न



भावगत / राशिगत बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। हांलांकि, यदि बुध अपने नक्षत्र में स्थित है, और/या यदि मंगल उच्चस्थ या अपनी राशि में स्थित है, तो आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे और अपेक्षाकृत कम आयु में अपनी शिक्षा, बुद्धिमत्ता और विवेक का प्रभावी रूप से प्रयोग करके जीवन में प्रगति करेंगे। लेकिन, यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं है, तो आप बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं— जिससे आपकी शिक्षा उत्तम नहीं हो सकती है। अपनी मध्य किशोरावस्था में आप बुरी संगति में पड़ सकते हैं और गलत रास्तों को अपनाकर अपने भविष्य को बर्बाद कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। इस कारण से आप अपने छोटे भाई-बहनों के मामले में

भाग्यशाली होंगे। आप अशांत, सक्रिय और व्यस्त होंगे, आपको विषयों के बारे में व्यापक जानकारी और ज्ञान को प्राप्त करने में रुचि होगी और कई सालों तक आप अनौपचारिक अध्ययन जारी रखेंगे। अधिक लेखन और संवादों का आदान-प्रदान आपके पेशे का हिस्सा हो सकते हैं, आप कई यात्रायें कर सकते हैं। आपकी संगीत में विशेष रुचि हो सकती है या समय व्यतीत करने के लिए आप संगीत का आनन्द ले सकते हैं। यदि नैसर्गिक अशुभ ग्रह बुध के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मानसिक भ्रम का सामना कर सकते हैं और कुछ गलत काम कर सकते हैं।

भावगत / राशिगत बुध का विशेष फल

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। आप चालाक एवं झगड़ालू स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके मित्र स्वार्थी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, छठे या बारहवें भाव में स्थित है। आपमें संकोच और निराशा की भावना कभी-कभी बहुत ही ज्यादा हो सकती है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुललाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्यनक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्रीमंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों-फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्रनाम का

जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

- 1- बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
- 2- अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
- 3- किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

बुध ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

बुध ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

बुध ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी- भारंगी की जड़।

बुध ग्रह के लिए स्नान और दान

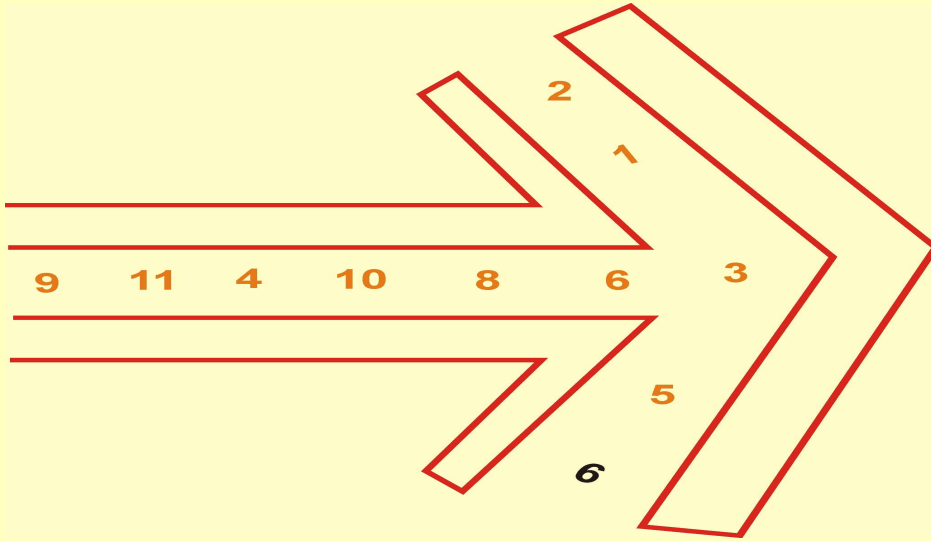
आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चाँदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

बुध ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

9	4	11
10	8	6
5	12	7

तांत्रिक यंत्र



गुरु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।



जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धु जनितरचापोऽथमीनाधिपः॥
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे।
सप्तांकद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम॥

गुरु ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत बृहस्पति का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। बृहस्पति यहां नीचस्थ है, इस कारण से आप अपने जीवन के प्रारम्भ में कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं। यदि बृहस्पति सूर्य को छोड़कर अन्य 7 ग्रहों में से किसी के साथ है, तो बृहस्पति की भुक्ति या दशा के दौरान आप जीवन में शानदार प्रगति करेंगे। बृहस्पति के नीचस्थ होने के कारण से आपको व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान नहीं होगा और भाषाओं पर बहुत उत्तम नियंत्रण नहीं हो सकता है। साथ ही आप अपनी संतानों के जन्म के समय पर कुछ परेशानियों का सामना कर सकते हैं, गर्भपात का भय है। यदि आपका लग्न धनु या मीन है, तो आपका जन्म अवश्य एक धनी परिवार में हुआ

होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपके पिता एक आदरणीय और जिम्मेदार व्यक्ति होंगे, आपका जीवनसाथी अपने परिवार में भाई-बहनों में सबसे बड़ा हो सकता है और आपकी संतानें योग्य एवं कर्तव्यपरायण होंगी। आप बहुत बुद्धिमान, सुशिक्षित, मर्यादित और विवेकी व्यक्ति होंगे, आपके मित्रों और परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा और पेशे से आपकी आय बहुत सारभूत होगी। आप एक शांतिपूर्ण और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने प्रशंसनीय कामों के कारण विख्यात होंगे और सामान्यतः लोग आपको उचित आदर देंगे। आपके सम्मान और विश्वसनीयता में हमेशा वृद्धि होगी।

भावगत/राशिगत बृहस्पति का विशेष फल

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। आपमें धैर्य एवं बुद्धि की कमी हो सकती है। पर्याप्त मेहनत के बावजूद आपको उचित सफलता नहीं मिल सकती है। भाई-बन्धुओं से प्रेम एवं सहयोग की कमी हो सकती है। विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। आपमें अपना भला बुरा समझने की समझकम हो सकती है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने कामधंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबहशाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनतेबनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

गुरु ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना

चाहिए।

- 1- शिक्षकों, गुरुओं, वृद्धों, साधु-संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
- 2- कोर्ट-कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

गुरु ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

गुरु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जब, भुजा या कमर में धारण करें।

गुरु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी- केले की जड़।

गुरु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित

दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी यानीबू का दान करना चाहिए।

गुरु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केंसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

10	5	12
11	9	7
6	13	8

तांत्रिक यंत्र

15	28	29	30	32	31	
14	6	13	10	16	17	26
11	22	1	9	21	8	
23	5	4	12	2	7	20
26	24	25	3	18	19	

शुक्र ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ।



शुक्रो भर्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक् ।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः ॥
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध रानी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू ।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

शुक्र ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। जैसाकि शुक्र इस राशि में सुव्यवस्थित नहीं है, आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। आप किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, आपका शरीर कमजोर हो सकता है और कंजूस हो सकते हैं। जैसाकि वादों को पूरा करना आपकी आदत नहीं हो सकती है, अतः लोग आप पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपको दूसरों के मामलों में अधिक रुचि हो सकती है, कुछ अन्य के पास होने वाली चीज का स्वयं के पास अभाव होने की सोच आपको अप्रसन्न कर सकती है। आपका वैवाहिक जीवन ना ही खुशहाल हो सकता है, और ना ही लम्बे समय तक रहने वाला हो सकता है। हालांकि, बाद की आयु में आपकी संभावनायें उत्तम हैं एवं आप जीवन के उस भाग में काफी सुखी

होंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप मृदुभाषी, परिष्कृत स्वभाव वाले सभ्य व्यक्ति, मनोहारी ढंगों और आकर्षक व्यवहार वाले होंगे। आप नम्रता, ज्ञान और मेधा की प्रतिमूर्ति होंगे और ललित कलाओं के किसी क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर सकते हैं और अपनी रचनात्मक योग्यताओं के कारण विख्यात होंगे। आप पवित्र मंत्रों के जाप से कुछ वांछित प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं और जादुई उपचार के द्वारा पीड़ित लोगों के दुखों को दूर करने का गुण भी प्राप्त कर सकते हैं। आप और आपका जीवनसाथी दोनों एक दूसरे को अपने जीवन से अधिक चाहेंगे, आपकी पुत्रियों की संख्या अधिक हो सकती है— जो सुन्दर और कर्तव्यपरायण होंगी। आपका घरेलू जीवन वास्तव में बहुत खुशहाल और आनन्दमय होगा। यदि शुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो लाभकारी परिणामों की संख्या और भी बढ़ सकती है।

भावगत/राशिगत शुक्र का विशेष फल

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओंका पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव-पार्वती या विष्णु-लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम-वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रुझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार-बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

- 1- अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
- 2- कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शुक्र ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शुक्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मासमें शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहुति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शुक्र ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

शुक्र ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।

जड़ी- अरंडे की जड़।

शुक्र ग्रह के लिए स्नान और दान

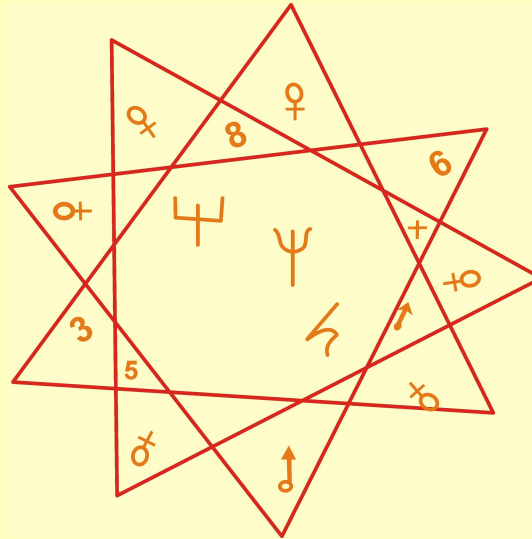
स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चाँदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

11	6	13
12	10	8
7	14	9

तांत्रिक यंत्र



शनि ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात् ।



मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः कारयपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः॥
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम् ॥

शनि ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत शनि का फल

आपकी कुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। इस कारण से आप युवा विचारों वाले, काफी बुद्धिमान, बहुत उर्जावान और उत्साही व्यक्ति होंगे। आपमें जल्दबाजी में निर्णय लेने की आदत नहीं होगी और विभिन्न संभावनाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करके और उपयोगी पहलूओं का उचित ध्यान रखते हुए ही आप अपनी सुविचारित योजनाओं को आकार देंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों तथा उपलब्धियों की संभावनाओं के मामले में बहुत अधिक चैतन्य होंगे। अपने निवास स्थान से बहुत दूर किसी स्थान पर आप प्रगति करेंगे और रचनात्मक कामों में प्रयास करके अपने भाग्य को संवारेंगे। पवित्र प्राचीन शास्त्रों में आपकी गहरी रुचि हो सकती है और मंत्रों के जाप तथा प्रार्थनाओं में दृढ़ आस्था हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। यह स्थिति बहुत युक्तिपूर्ण और संभवतः खतरनाक है,

आपको बहुत सावधान और सजग रहना होगा और आपको एक नियमित तथा अनुशासित जीवनशैली अपनानी चाहिए एवं सद्मार्ग से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। आपमें लोगों के ध्यान को मोड़ने की विलक्षण प्रतिभा होगी और आप वास्तव में जो सोचेंगे, लोग उस पर विश्वास कर सकते हैं। यदि आप किसी सामाजिक उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं या राजनीति में शामिल हैं, तो आप बहुमत के सक्रिय सहयोग से अपने समकालीनों से बहुत आगे निकलने में सक्षम होंगे, लेकिन जैसाकि आप बड़ी अभिलाषाओंको पूरा कर पाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, आप अचानक किसी आकस्मिक पतन का सामना कर सकते हैं— विशेषकर यदि शनि वक्री है। यदि मंगल शनि के साथ में स्थित है, तो आपके किसी सगे छोटे भाई या बहन की मानसिक स्थिति का क्षय आपकी वास्तविक भारी चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे— जैसाकि आपको शशयोग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। आप एक महत्वपूर्ण और सम्माननीय व्यक्ति की तरह समाज में जाने जायेंगे, लेकिन आपको अपने सगे-संबंधियों से दूर रहना पड़ सकता है।

भावगत/राशिगत शनि का विशेष फल

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। आपके सिर या मस्तिष्क में किसी तरह के विकार होने की संभावना है। अपने ससुराल वालों के कारणकष्ट प्राप्त हो सकता है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्रीका नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार-बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ-सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

शनि ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एवं तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैंकट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालोंको काफी सफलता प्राप्त होगी।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

शनि ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र मेंदोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

शनि ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी- धतुरे की जड़।

शनि ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से

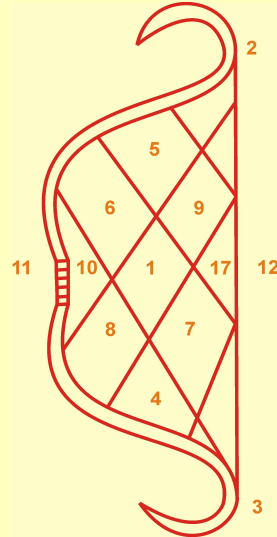
शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

शनि ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

12	7	14
13	11	9
8	15	10

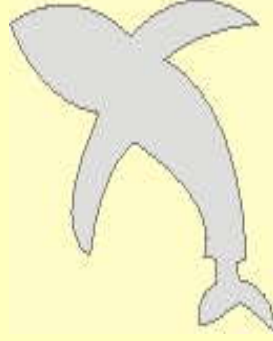
तांत्रिक यंत्र



राहु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ।



राहुः सिंहलदेशजश्च निर्वृतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो ।
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः॥
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्वृतिः प्रत्याधिदेवः सदा ।
षट्त्रिस्थः शुभकृच सिंहिकासुतः कुर्यात् सदा मंगलम् ॥

राहु ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। इस कारण से आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करने और बौद्धिक कामों में सफलता प्राप्त करने के मामले में भाग्यशाली होंगे, लेकिन आपको वायु विकार हो सकता है और आपकी माता को लकड़ी या पत्थर से चोट लग सकती है। कुछ छोटी समस्याओं के कभी-कभी उभरने के कारण आपको अपने घर या निवास स्थान पर बहुत आराम महसूस नहीं हो सकता है। यदि बृहस्पति भीराहु के साथ है, तो आपकी किसी एक संतान के विचार कुछ हद तक संशयपूर्ण हो सकते

हैं।

आपकी कुण्डली में राहु लग्न से या तो केन्द्र भाव में या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है, इस स्थिति में होने के कारण राहु इस कुण्डली में एक तात्कालिक लाभप्रदाता का काम करता है। आप शैक्षणिक और/या बौद्धिक कार्यों को उत्तम प्रकार से करेंगे और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में आपका सुधार होगा। आप बहुत भाग्यशाली होंगे तथा राहु की भुक्ति या दशा के दौरान आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओंका सामना कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु प्रतिकूल आठवें भाव में उपस्थित नहीं है और यह सूर्य के निकट (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) स्थित है। आपको अपनी आंखों से संबंधी कुछ परेशानियां हो सकती हैं। फिर भी कई संदर्भों में यह एक अनुकूल योग है। गुरु ग्रह की दशा एवं भुक्ति अवधि के दौरान, आपके जीवन में किसी समय, ऐसे व्यक्ति से मिलने की संभावना है जिसका लग्न सिंह है— जिससे कि आप लाभ अर्जित करेंगे।

भावगत/राशिगत राहु का विशेष फल

आपकी कुण्डली में राहु सूर्य या चंद्रमा के साथ स्थित है। आपको कोई निर्णय लेने में मुश्किल हो सकती है या आपकी निर्णय क्षमता में कमी हो सकती है।

राहु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस-पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

- 1— अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।
- 2— सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

राहु ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता

है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

राहु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। राहु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रतके दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्रका 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

राहु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

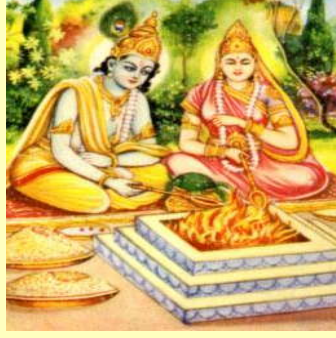


ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस-पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

राहु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- चंदन की लकड़ी।

जड़ी- अष्टगन्ध मूल।

राहु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

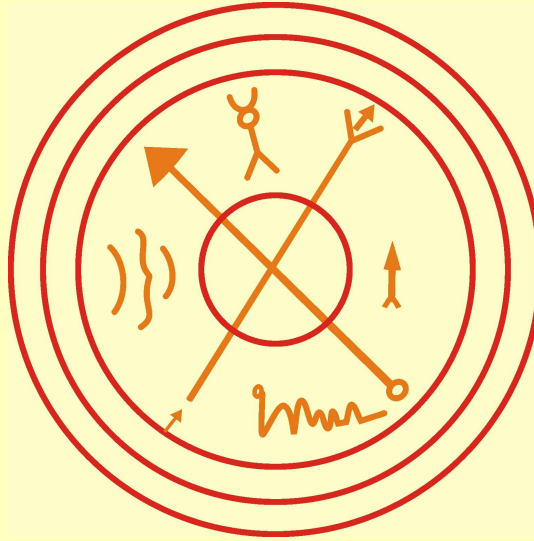
राहु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

13	8	15
14	12	10
9	16	11

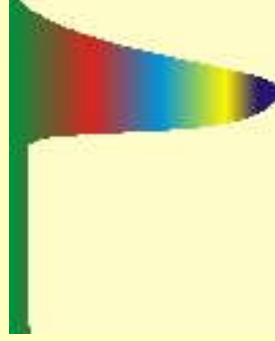
तांत्रिक यंत्र



केतु ग्रह से संबंधित मंत्र, यंत्र और उपाय



ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात् ।



केतुर्जेमिनिगोत्रजः कुशसमुद् वायव्यकोणे स्थितः ।
चित्राङ्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः ॥
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा ।
षट्त्रिस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥

केतु ग्रह के लिए रत्न



भावगत/राशिगत केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है। इस कारण आपको अपने व्यवसाय के कारण अपना घर या निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है। लेकिन यह आपको और प्रसन्न बना सकता है— चूंकि आप अपने घर या निवास स्थान पर रहते हुए बहुत प्रसन्न नहीं हो सकते हैं। यदि मंगल भी केतु के साथ स्थित है, तो आपके सगे छोटे भाई-बहनों को कुछ गंभीर प्रकार की समस्याएँ हो सकती हैं, लेकिन यदि कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह केतु के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है, तो आप मनोरम वातावरण के बीच में एक उत्तम समय गुजारेंगे।

केतु ग्रह के साधारण उपाय

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस-पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

- 1- अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिकों संस्थानों में कार सेवा करें।
- 2- सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

केतु ग्रह के लिए व्रत



बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

केतु के लिए कोई भी दिन निश्चित नहीं किया गया है। केतु के लिए शनिवार का व्रत किया जा सकता है।

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रतके दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्रका 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-सम्पन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेंगे, उनकी उचित देखभाल करेंगे, तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान और सुख प्राप्त

होगा ।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार, आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा । सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होंगे, तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवनमें कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं ।

केतु ग्रह पीड़ा शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग



ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियां हैं, जैसे दान करना, मंत्र जप करना, रत्न धारण करना आदि । जड़ी धारणकरना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है ।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें । किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें । जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए ।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें ।

केतु ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है । हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है । इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है । हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो

जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री— सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी— वट वृक्ष की जड़।

केतु ग्रह के लिए स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग—बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

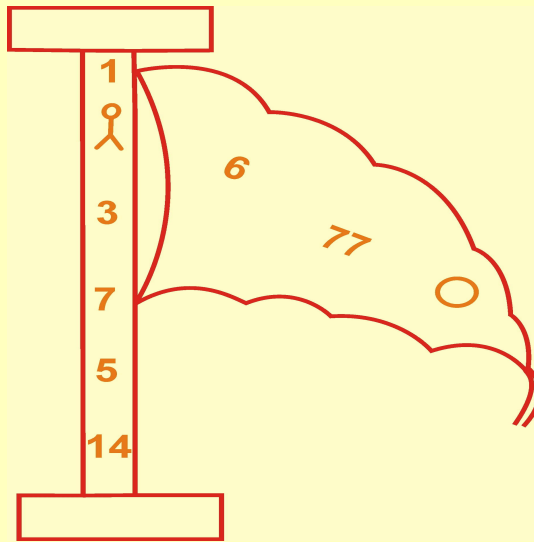
केतु ग्रह के लिए यंत्र

यंत्र भोजपत्र पर लाल चंदन या अष्टगन्ध या केसर मिले चंदन से तुलसी, अनार, सोने या चाँदी की कलम से अंकित करना चाहिए। यंत्र सोने, चाँदी या ताँबे पर भी अंकित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे यंत्र स्थापित करके पूजे जा सकते हैं। धारण करने के लिए भोजपत्र पर ही अंकित करना चाहिए। यंत्रों को हमेशा सोने, चाँदी या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। यंत्रों का निर्माण जनेऊधारी व्यक्ति को करना चाहिए। इससे यंत्र अधिक जागृत होकर धारणकर्ता पर अपना प्रभाव डालते हैं।

14	9	16
15	13	11
10	17	12

तांत्रिक यंत्र

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)



लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुर्खैर्युतो भवेत् ॥

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय— साढ़े सात साल— ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढ़ेसाती के प्रथम चक्र का विवरण
प्रथम दैव्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिंह

Start -07:09:1977

End -04:11:1979

Duration -2 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -15:03:1980

End -27:07:1980

Duration -0 y.4 m.12 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्च कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे

रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा-मौसी को भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधाएँ आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहाँ भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग-विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्च कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। आपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठाएँ।

द्वितीय दैव्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -04:11:1979

End -15:03:1980

Duration -0 y.4 m.10 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -27:07:1980

End -06:10:1982

Duration -2 y.2 m.10 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरुआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ट हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले-बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम-वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके

खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच-विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते-बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा-पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल-मटोल कर सकते हैं। धीरे-धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमें सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधाएँ उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतीय दैव्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -06:10:1982

End -21:12:1984

Duration -2 y.2 m.15 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -01:06:1985

End -17:09:1985

Duration -0 y.3 m.17 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच-विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भीकाम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह

भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन-देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रुचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग-दौड़ के कारण आपका शरीरकमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर-उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वर का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -17:12:1987

End -21:03:1990

Duration -2 y.3 m.3 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:06:1990

End -15:12:1990

Duration -0 y.5 m.26 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन

रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशान रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रुक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच-समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग-विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि —मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई-बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता

है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्च पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण व्यवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्त आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम-वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती के द्वितीय चक्र का विवरण प्रथम दैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिंह

Start -01:11:2006

End -10:01:2007

Duration -0 y.2 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:07:2007

End -10:09:2009

Duration -2 y.1 m.25 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधाये उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी

संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा-मौसी को भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधाएं आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग-विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्च कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितीय दैव्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -10:09:2009

End -15:11:2011

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:05:2012

End -04:08:2012

Duration -0 y.2 m.19 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरुआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही

यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले-बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम-वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच-विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते-बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा-पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल-मटोल कर सकते हैं। धीरे-धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमें सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधाये उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिन्ता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतीय दैव्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरु में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच-विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्यके लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन-देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग-दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर-उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वर का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -धनु

Start -26:01:2017

End -21:06:2017

Duration -0 y.4 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:10:2017

End -24:01:2020

Duration -2 y.2 m.29 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशान रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच-समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग-विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि —मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई-बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्च पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण व्यवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्त आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम-वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

**शनि साढेसाती के तृतीय चक्र का विवरण
प्रथम दैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल**

गोचर राशि –सिंह

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्याएँ पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वेसफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्च कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा-मौसी को भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधाएँ आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग-विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्च कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। आपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठाएँ।

द्वितीय दैव्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -22:10:2038

End -05:04:2039

Duration -0 y.5 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:07:2039

End -28:01:2041

Duration -1 y.6 m.16 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरुआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ट हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले-बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम-वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाजमें अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच-विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते-बनते बिगड़सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा-पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोगटाल-मटोल कर सकते हैं। धीरे-धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमें सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधाएँ उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिन्ता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित

प्रतिक्रिया / रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतीय दैव्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच-विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्यके लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहारप्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन-देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग-दौड़ के कारण आपका

शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर-उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वर का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशान रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिकहानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रुक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच-समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग-विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है।

यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि —मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभभाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई-बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्च पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपनेना देखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण व्यवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजहसे आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम-वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढैय्या के उपाय

Page-107

Abhimanue Singh

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें—

मंत्र—

1— महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। —

ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

2— शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें—

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः । ॐ शं शनैश्चराय नमः ॥

3— पौराणिक शनि मंत्र—

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

स्तोत्र —

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥
तानि शनि—नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति ॥

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र— पिप्पलाद के अनुसार—

नमस्ते कोणसंस्थय पिङ्गलाय नमोस्तुते ।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते ॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च ।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ॥
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते ।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥

रत्न—

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

व्रत—

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकतेहैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

दान —

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि —

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

कन्या राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय—

- 1— शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।
- 2— प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- 3— बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।
- 4— शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।
- 5— अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।
- 6— शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुक्वायें।
- 7— किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं

लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8— प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या के विशेष उपाय —

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा—अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहे हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1— शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2— शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक—बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3— काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4—यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5— शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6— मद्यपान ना करें।

7— शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल केदीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8— भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9— शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारणकरें।

10— शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसोंतेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11— नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण

करें।

12— प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वादशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13— प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बन्दरों को चने खिलायें।

14— शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरु में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्तहोगा।

15— अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुलु की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरु करें।

16— प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक-एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पितकरें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात् पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकीके बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17— आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18— पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19— शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रितदीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11

माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20— प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21— शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22— किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23— मांस-मदिरा से दूर रहें।

24— किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25— घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26— काले वस्त्र धारण करें।

27— घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28— शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29— काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30— शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31— शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार

करें।

32— साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33— रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34— नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35— शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36— किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37— शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38— प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39— अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील टुकवायें।

40— अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

लाल किताब में गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत्।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवंआर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना साडर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय— साढ़े सात साल— ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहनका क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढ़ेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिंह

Start -07:09:1977

End -04:11:1979

Duration -2 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -15:03:1980

End -27:07:1980

Duration -0 y.4 m.12 d.

पहले ढैय्या के दौरान किसी को कर्ज ना दें, क्योंकि कर्ज के रूप में दिया हुआ धन वापस आने की संभावना नहीं है। जीवनसाथी की सहायता से व्यापार या नौकरी में तरक्की हो सकती है। आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, छिपे शत्रु आपका काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उपाय –

- 1— मजदूरों की सेवा करें।
- 2— नंगे पैर मंदिर में जाकर भगवान से क्षमा प्रार्थना करें।
- 3— ग्यारह शनिवार लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर डकोत को दें।

द्वितीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -04:11:1979

End -15:03:1980

Duration -0 y.4 m.10 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -27:07:1980

End -06:10:1982

Duration -2 y.2 m.10 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आपके व्यापार में कई बार बदलाव हो सकते हैं। यदि आप सोझेदारी में कोई व्यापार करते हैं, तो साझेदार से झगड़ा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका अक्सर झगड़ा हो सकता है। यदि आप चमड़ा, मशीनरी या पत्थर आदि का कोई काम करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

उपाय –

- 1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2– दस अंधे पुरुषों को खाना खिलायें।
- 3– काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनें।

तृतीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -06:10:1982

End -21:12:1984

Duration -2 y.2 m.15 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -01:06:1985

End -17:09:1985

Duration -0 y.3 m.17 d.

इस ढैय्या के दौरान व्यापार में हानि होने की वजह से आप आर्थिक परेशानियों से घिर सकते हैं। समाज में अक्सर अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जीवनसाथी तथा अपने ससुराल पक्ष से मधुर संबंध बनाकर रखें।

उपाय –

- 1– मांस-मदिरा का सेवन ना करें।
- 2– साँप को दूध पिलायें।
- 3– लगातार 43 दिन मंदिर जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -17:12:1987

End -21:03:1990

Duration -2 y.3 m.3 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:06:1990

End -15:12:1990

Duration -0 y.5 m.26 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

- 1– एक लीटर शराब नदी में प्रवाहित

करें।

2- मांस-मदिरा का सेवन ना करें।

3- शनि स्तोत्र का पाठ करें।

4- तिली के तेल में उड़द या तिल के लड्डू बनाकर बंजर भूमि में दबायें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

1- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

2- चाँदी का चौरस टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।

3- काले कुत्ते को राटी खिलायें।

4- शनिवार को आठ किलो काले उड़द की दाल नदी में प्रवाहित करें।

शनि साढेसाती के द्वितीय चक्र का विवरण

प्रथम ढैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिंह

Start -01:11:2006

End -10:01:2007

Duration -0 y.2 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:07:2007

End -10:09:2009

Duration -2 y.1 m.25 d.

पहले ढैय्या के दौरान किसी को कर्ज ना दें, क्योंकि कर्ज के रूप में दिया हुआ धन वापस आने की संभावना नहीं है। जीवनसाथी की सहायता से व्यापार या नौकरी में तरक्की हो सकती है। आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, छिपे शत्रु आपका काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उपाय –

1- मजदूरों की सेवा करें।

2- नंगे पैर मंदिर में जाकर भगवान से क्षमा प्रार्थना करें।

3- ग्यारह शनिवार लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर डकोत को दें।

द्वितीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -10:09:2009

End -15:11:2011

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:05:2012

End -04:08:2012

Duration -0 y.2 m.19 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आपके व्यापार में कई बार बदलाव हो सकते हैं। यदि आप सोझेदारी में कोई व्यापार करते हैं, तो साझेदार से झगड़ा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका अक्सर झगड़ा हो सकता है। यदि आप चमड़ा, मशीनरी या पत्थर आदि का कोई काम करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

उपाय –

- 1- शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- दस अंधे पुरुषों को खाना खिलायें।
- 3- काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनें।

तृतीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

इस ढैय्या के दौरान व्यापार में हानि होने की वजह से आप आर्थिक परेशानियों से घिर सकते हैं। समाज में अक्सर अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जीवनसाथी तथा अपने ससुराल पक्ष से मधुर संबंध बनाकर रखें।

उपाय –

- 1- मांस-मदिरा का सेवन ना करें।
- 2- साँप को दूध पिलायें।
- 3- लगातार 43 दिन मंदिर जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -26:01:2017

End -21:06:2017

Duration -0 y.4 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:10:2017

End -24:01:2020

Duration -2 y.2 m.29 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय

करना लाभदायक होगा।

उपाय –

- 1- एक लीटर शराब नदी में प्रवाहित करें।
- 2- मांस-मदिरा का सेवन ना करें।
- 3- शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 4- तिली के तेल में उड़द या तिल के लड्डू बनाकर बंजर भूमि में दबायें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

- 1- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 2- चाँदी का चौरस टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।
- 3- काले कुत्ते को राटी खिलायें।
- 4- शनिवार को आठ किलो काले उड़द की दाल नदी में प्रवाहित करें।

शनि साढेसाती के तृतीय चक्र का विवरण

प्रथम दैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिंह

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

पहले दैय्या के दौरान किसी को कर्ज ना दें, क्योंकि कर्ज के रूप में दिया हुआ धन वापस आने की संभावना नहीं है। जीवनसाथी की सहायता से व्यापार या नौकरी में तरक्की हो सकती है। आपको हमेशा सचेत एवं सावधान रहना चाहिए, छिपे शत्रु आपका काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उपाय –

- 1- मजदूरों की सेवा करें।
- 2- नंगे पैर मंदिर में जाकर भगवान से क्षमा प्रार्थना

करें।

3- ग्यारह शनिवार लोहे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर डकोत को दें।

द्वितीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -22:10:2038

End -05:04:2039

Duration -0 y.5 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:07:2039

End -28:01:2041

Duration -1 y.6 m.16 d.

दूसरे ढैय्या के दौरान आपके व्यापार में कई बार बदलाव हो सकते हैं। यदि आप सोझेदारी में कोई व्यापार करते हैं, तो साझेदार से झगड़ा हो सकता है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका अक्सर झगड़ा हो सकता है। यदि आप चमड़ा, मशीनरी या पत्थर आदि का कोई काम करते हैं, तो आपको लाभ प्राप्त हो सकता है।

उपाय –

- 1- शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- दस अंधे पुरुषों को खाना खिलायें।
- 3- काले घोड़े की नाल का छल्ला पहनें।

तृतीय ढैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

इस ढैय्या के दौरान व्यापार में हानि होने की वजह से आप आर्थिक परेशानियों से घिर सकते हैं। समाज में अक्सर अपमानित होना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने जीवनसाथी तथा अपने ससुराल पक्ष से मधुर संबंध बनाकर रखें।

उपाय –

- 1- मांस-मदिरा का सेवन ना करें।
- 2- साँप को दूध पिलायें।
- 3- लगातार 43 दिन मंदिर जाकर हनुमान चालीसा का पाठ करें।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

यदि कंटक शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

- 1– एक लीटर शराब नदी में प्रवाहित करें।
- 2– मांस-मदिरा का सेवन ना करें।
- 3– शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 4– तिली के तेल में उड़द या तिल के लड्डू बनाकर बंजर भूमि में दबायें।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

यदि अष्टम शनि के दौरान आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी या हानि होती है, तो नीचे लिखे उपाय करना लाभदायक होगा।

उपाय –

- 1– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 2– चाँदी का चौरस टुकड़ा हमेशा अपनी जेब में रखें।
- 3– काले कुत्ते को राटी खिलायें।
- 4– शनिवार को आठ किलो काले उड़द की दाल नदी में प्रवाहित करें।

विंशोत्तरी दशा से भविष्यफल और उपाय

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

शनि अर्न्तदशा (18:12:1973 से 14:04:1975)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय का जाप करें।
- 2- काली गाय या भैंस का दान करें।
- 3- रुद्रावतार हनुमान एवं महाकाली की पूजा करें।

बुध अर्न्तदशा (14:04:1975 से 13:09:1976)

आपकी कुण्डली में बुध नीच राशि में या अस्त या पाप ग्रहों के साथ स्थित है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान आप रोग ग्रस्त हो सकते हैं। खेती, नौकरी, व्यवसाय आदि में हानि हो सकती है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- 2- रोज ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 108 बार जप करें।
- 3- आपका लग्न मिथुन, कन्या, वृष या सिंह है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (13:09:1976 से 14:04:1977)

आपकी कुण्डली में केतु पापी ग्रहों के साथ स्थित है या दृष्ट है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपके शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। स्वजनों से कलह होने की भी संभावना है।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय जाप करें।
- 2- शिव, गणेश, काली या दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (14:04:1977 से 13:12:1978)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- रोज ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।
- 2- शिव की पूजा करें।
- 3- गाय एवं चांदी दान करें।
- 4- शिव-पार्वती या शिव-दुर्गा की पूजा करें।

सूर्य अर्न्तदशा (13:12:1978 से 14:06:1979)

आपकी कुण्डली में सूर्य लग्न या चंद्रमा से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है या पापी ग्रहों के साथ स्थित है।

सूर्य की अंतर्दशा के दौरान आपको चोर एवं सांप का खतरा हो सकता है। आप रोगग्रस्त हो सकते हैं। आप विदेश जा सकते हैं, जहां आप कुछ कष्ट अनुभव कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- शिव की पूजा करें तथा शिवमंत्र का जाप करें।

मंगल दशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

मंगल अर्न्तदशा (14:06:1979 से 10:11:1979)

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

मंगल की महादशा या अंतर्दशा के दौरान आपको अचानक धन हानि हो सकती है। शारीरिक कष्ट आपको परेशान कर सकते हैं। किसी प्रकार की दुर्घटना या मृत्युतुल्य कष्ट की संभावना है।

उपाय-

- 1- रुद्र जाप करें तथा लाल बैल दान करें।
- 2- कार्तिकेय, दुर्गा, हनुमान एवं नरसिंह विष्णु की पूजा करें।

राहु अर्न्तदशा (10:11:1979 से 28:11:1980)

आपकी कुण्डली में राहु पापी ग्रहों के साथ स्थित है या पापी ग्रहों से दृष्ट है।

राहु की अंतर्दशा के दौरान आपको चोर एवं सांप से खतरा हो सकता है। आपको पशुओं की हानि हो सकती है। आपको वात-पित्त की समस्या हो सकती है।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय जाप करें।
- 2- नागपूजा करें।
- 3- ब्राह्मणों को भोजन करायें। शिव एवं दूर्गा की पूजा करें।

गुरु अर्न्तदशा (28:11:1980 से 04:11:1981)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- शिव सहस्रनाम का जाप करें।
- 2- शिव एवं विष्णु की अराधना करें।

शनि अर्न्तदशा (04:11:1981 से 13:12:1982)

आपकी कुण्डली में शनि अस्त या वक्री है।

आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के साथ स्थित है या पापी ग्रहों से दृष्ट है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान राजपक्ष से कष्ट हो सकता है, धन की हानि हो सकती है, रोगों से परेशान हो सकते हैं, खेती या व्यापार में हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शनि मंगल से आठवें या बारहवें भाव में पापी ग्रहों के साथ स्थित है। आपको मृत्युतुल्यकष्ट, वात रोग एवं शत्रुओं से हानि हो सकती है।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय जाप करें एवं रूद्र-शिव की पूजा करें।
- 2- रूद्रावतार हनुमान की पूजा करें।

बुध अर्न्तदशा (13:12:1982 से 10:12:1983)

आपकी कुण्डली में बुध नीच राशि में स्थित है या अस्त है।

आपकी कुण्डली में बुध लग्न या मंगल से छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान आप हृदय रोग या उदर रोग या छाती के रोग से ग्रसित हो सकते हैं। अपने भाई-बन्धु से वियोग हो सकता है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है। धन एवं पशुओं की हानि हो सकती है।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- 2- घोड़ा दान करें।
- 3- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (10:12:1983 से 08:05:1984)

आपकी कुण्डली में केतु पापी ग्रहों के साथ स्थित है।

केतु की अर्न्तदशा के दौरान आप रोग एवं शारीरिक कष्ट से परेशान हो सकते हैं। पारिवारिक कलह हो सकता है एवं आपको किसी प्रकार के अस्त्र से खतरा हो सकता है।

उपाय-

- 1- गणेश एवं दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (08:05:1984 से 08:07:1985)

आमतौर पर आप इस अर्न्तदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अर्न्तदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- गाय या भैंस दान करें।
- 2- दुर्गा एवं शिव की आराधना करें।
- 3- आपका लग्न वृष, तुला, मिथुन, कन्या, मकर या कुम्भ है। आप हीरा या सफेद मूंगा या सफेद पुखराजधारण कर सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा (08:07:1985 से 13:11:1985)

आपकी कुण्डली में सूर्य पापी ग्रह के साथ स्थित है।

सूर्य की अर्न्तदशा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट एवं काम में हानि हो सकती है। आप मस्तिष्क रोग या अतिसार से भी ग्रसित हो सकते हैं।

उपाय-

- 1- सूर्य की आराधना करें।
- 2- गायत्री मंत्र का जाप करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (13:11:1985 से 14:06:1986)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा एवं लक्ष्मी का जप एवं पूजा करें।
- 2- गाय या भैंस दान करें।

राहु दशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

राहु अर्न्तदशा (14:06:1986 से 24:02:1989)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, यदि इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- राहु के मंत्र का जप करें।
- 2- दुर्गा एवं हनुमान की अराधना करें।

गुरु अर्न्तदशा (24:02:1989 से 20:07:1991)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति लग्न या राहु से छठें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीच राशि में स्थित है।

बृहस्पति की अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट, धन हानि, काम में रूकावट या हानि, हृदय रोग एवं उदर रोग जैसे अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है। सरकारी विभागों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ एवं सहयोग प्राप्त हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे या सातवें भाव का स्वामी है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

उपाय-

- 1- शिव के स्वर्ण प्रतिमा की पूजा करें।
- 2- विष्णु की पूजा करें।

शनि अर्न्तदशा (20:07:1991 से 26:05:1994)

आपकी कुण्डली में शनि अस्त या वक्री है।

आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रह के साथ स्थित है या पापी ग्रह से दृष्ट

है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको नीच लोगों, अधीनस्थों, नौकरों एवं शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए। इनसे आपको खतरा हो सकता है। सत्तापक्ष से आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है। आप पारिवारिक कलह से परेशान हो सकते हैं। हृदय रोग होने की भी कुछ संभावना हो सकती है। इस दौरान आप विदेश या किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- काली गाय या भैंस दान करें।
- 2- महाकाली एवं कालभैरव की आराधना करें।
- 3- काले शिवलिंग एवं विष्णु की काली प्रतिमा की पूजा करें।
- 4- शनिवार को हनुमान की पूजा करें एवं प्रतिमा पर तेल तथा सिंदूर अर्पित करें।

बुध अन्तर्दशा (26:05:1994 से 13:12:1996)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का जप करें।
- 2- दुर्गा की पूजा करें।
- 3- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, सिंह या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (13:12:1996 से 31:12:1997)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- गणेश एवं काली या गणेश एवं चामुंडा दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अन्तर्दशा (31:12:1997 से 31:12:2000)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा

करें।

2- शिव की पूजा करें।

3- आपका लग्न वृष, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप हीरा, सफेद मूंगा या सफेद पुखराज धारण कर सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (31:12:2000 से 25:11:2001)

आपकी कुण्डली में सूर्य पापी ग्रहों के साथ स्थित है या पापी ग्रहों से दृष्ट है।

सूर्य की अंतर्दशा के दौरान आप प्रायः ज्वर से पीड़ित रह सकते हैं। पारिवारिक कलह से मन परेशान रह सकता है। चोर एवं आग से खतरा हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

उपाय-

1- सूर्य की आराधना करें।

2- शिव की पूजा करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (25:11:2001 से 26:05:2003)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1- सफेद गाय भैंस दान करें।

2- शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।

मंगल अन्तर्दशा (26:05:2003 से 13:06:2004)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1- बैल एवं गाय दान करें।

2- दुर्गा, हनुमान एवं नरसिंह विष्णु की आराधना करें।

गुरु दशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

गुरु अन्तर्दशा (13:06:2004 से 01:08:2006)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीच राशि या नवांश में स्थित है।

बृहस्पति की महादशा या अंतर्दशा के दौरान आपका स्थान परिवर्तन एवं पदावनति हो सकती है। चिंता एवं धन-संपत्ति की हानि से परेशान हो सकते हैं। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। वरिष्ठ अधिकारियों के कोप का भाजन बन सकते हैं। आपको मृत्युतुल्य कष्ट भी हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी है। आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है।

उपाय-

- 1- शिव सहस्रनाम का जप करें।
- 2- गाय दान करें।
- 3- ॐ नमः शिवाय एवं ॐ नमो नारायणाय मंत्र का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (01:08:2006 से 12:02:2009)

आपकी कुण्डली में शनि बृहस्पति से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में शनि लग्न से आठवें या बारहवें भाव में पापी ग्रह के साथ स्थित है या अस्त है या नीचराशि में स्थित है या शत्रु राशि में स्थित है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान धन की हानि हो सकती है। भाई-बन्धु आपका विरोध कर सकते हैं, काम में रुकावट आ सकती है, शारीरिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है, घर में कुछ अशुभ हो सकता है, पालतू पशु एवं वाहनों की हानि हो सकती है एवं नौकरी भी छूट सकती है। आप कष्टों से घिरे हो सकते हैं।

उपाय-

- 1- काली गाय या भैंस दान करें।
- 2- विष्णु सहस्रनाम का जाप करें।
- 3- हनुमान की पूजा करें।

बुध अर्न्तदशा (12:02:2009 से 20:05:2011)

आपकी कुण्डली में बुध पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। बुध की अंतर्दशा के दौरान आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। आपके सुख में कमी, व्यवसाय में हानि एवं किसी रोग से ग्रसित होने की संभावना है।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का जप करें।
- 2- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (20:05:2011 से 25:04:2012)

आपकी कुण्डली में केतु बृहस्पति से छटे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान सरकारी अधिकारियों के कोप का भाजन बन सकते हैं, धन हानि हो सकती है, रोग से ग्रसित हो सकते हैं तथा आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय जप करें।
- 2- गणेश, शिव एवं दुर्गा की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (25:04:2012 से 25:12:2014)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- गाय या भैंस का दान करें।
- 2- शिव की आराधना करें।
- 3- स्फटिक की माला पर रोज ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

सूर्य अर्न्तदशा (25:12:2014 से 13:10:2015)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- आदित्य स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- सूर्य एवं शिव की आराधना करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (13:10:2015 से 12:02:2017)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।
- 2- शिव की आराधना करें।

मंगल अर्न्तदशा (12:02:2017 से 19:01:2018)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- बैल दान करें।
- 2- शिव एवं दुर्गा की पूजा करें।

राहु अर्न्तदशा (19:01:2018 से 13:06:2020)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय का जाप करें।
- 2- शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।

शनि दशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

शनि अर्न्तदशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

आपकी कुण्डली में शनि अस्त या वक्री है।

शनि की महादशा के दौरान आपको विष या शस्त्र आदि से खतरा हो सकता है। आपका स्थान परिवर्तन हो सकता है, आपका तबादला या पदावनति हो सकती है। अपने माता-पिता से वियोग एवं जीवनसाथी तथा संतान को कष्ट होने की भी संभावना है। सरकारी कार्यों में रुकावट आ सकती है। शनि की अंतदशाके दौरान आपको शस्त्रों से खतरा हो सकता है। खूर से संबंधित कोई बीमारी भी हो सकती है।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय जप करें।
- 2- रुद्र-शिव की आराधना करें।
- 3- हनुमान की पूजा करें एवं मूर्ति पर तेल तथा सिंदूर अर्पित करें।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2023 से 24:02:2026)

आपकी कुण्डली में बुध लग्न या शनि से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित

है।

बुध की अर्तदशा के दौरान आपको अपने कामों में हानि हो सकती है, आपका मन बेचैन रह सकता है तथा आप किसी रोग से ग्रसित रह सकते हैं।

उपाय-

- 1- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 2- अन्नदान करें।
- 3- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जप करें।
- 4- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या या तुला है। आप फिरोजा या हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्तदशा (24:02:2026 से 05:04:2027)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- गणेश एवं काली की पूजा करें।
- 2- विष्णु की आराधना करें।

शुक्र अर्तदशा (05:04:2027 से 05:06:2030)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
- 2- गाय एवं भैंस दान करें।
- 3- शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।
- 4- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुंभ है। आप हीरा या सफेद मूंगा धारण कर सकते हैं।

सूर्य अर्तदशा (05:06:2030 से 17:05:2031)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- सूर्य एवं शिव की आराधना करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (17:05:2031 से 16:12:2032)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- गाय तथा भैंस दान करें।
- 2- शिव एवं पार्वती की आराधना करें।
- 3- स्फटिक की माला धारण कर उसी माला से ॐ नमः शिवाय का जप करें।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2032 से 25:01:2034)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- बैल दान करें।
- 2- हनुमान की आराधना करें।

राहु अर्न्तदशा (25:01:2034 से 01:12:2036)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय जप करें।
- 2- बैल दान करें।
- 3- शिव, दुर्गा एवं हनुमान की आराधना करें।
- 4- आपका लग्न मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, धनु या मीन है। आप हरा पन्ना या फिरोजा धारण कर सकते हैं।

गुरु अर्न्तदशा (01:12:2036 से 14:06:2039)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतदशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- शिवसहस्रनाम का जप करें।
- 2- सोना दान करें।
- 3- शिव के साथ-साथ विष्णु की भी आराधना करें।

बुध दशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

बुध अर्न्तदशा (14:06:2039 से 10:11:2041)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, यदि इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- विष्णुसहस्रनाम का जप करें।
- 2- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (10:11:2041 से 07:11:2042)

आपकी कुण्डली में केतु बुध से छटे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपको वाहन, विष या विषैले जंतुओं, चोर-डाकू या आपराधिक किस्म के लोगोंसे खतरा हो सकता है। आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। इस दौरान आपमें किसी तरह की पापकरने की प्रवृत्ति जागृत हो सकती है। नीच किस्म के लोगों की संगति से बचें।

उपाय-

- 1- गणेश एवं विष्णु की पूजा करें।
- 2- हरा पन्ना धारण करने से लाभ होगा।

शुक्र अर्न्तदशा (07:11:2042 से 07:09:2045)

आमतौर पर आप इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा की पूजा करें एवं दुर्गामंत्र ॐ नमश्चंडिकायै का जप करें।
- 2- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप हीरा या सफेद पुखराज या सफेद मूंगाधारण कर सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा (07:09:2045 से 14:07:2046)

आपकी कुण्डली में सूर्य बुध से बारहवें भाव में शनि, मंगल या राहु के साथ स्थित है।

सूर्य की अंतर्दशा के दौरान आपको चोर, डाकू, आग एवं शस्त्र आदि से खतरा हो सकता है। आप पित्त रोग एवं सिर दर्द से ग्रसित हो सकते हैं। आप मानसिक रूप से काफी परेशान रह सकते हैं।

उपाय-

- 1- सूर्य की आराधना करें।
- 2- सूर्य, शिव एवं विष्णु की पूजा करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (14:07:2046 से 13:12:2047)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा मंत्र ॐ नमश्चंडिकायै का जप करें।
- 2- वस्त्र दान करें।
- 3- आपका लग्न मेष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक या मीन है। आप सफेद मोती या स्फटिक धारण कर सकते हैं।

मंगल अर्न्तदशा (13:12:2047 से 10:12:2048)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- गाय दान करें।
- 2- मृत्युंजय जाप करें।
- 3- शिव, विष्णु एवं हनुमान की आराधना करें।

राहु अर्न्तदशा (10:12:2048 से 29:06:2051)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा करें एवं मंत्र जाप करें।
- 2- गाय या भैंस दान करें।
- 3- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

गुरु अर्न्तदशा (29:06:2051 से 04:10:2053)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति नीच राशि में स्थित है या अस्त है या उच्च राशि में वक्री है।

बृहस्पति की अंतर्दशा के दौरान अपनों से कलह हो सकता है, चोर, डाकू, विष सांप आदि से खतरा हो सकता है, आपकी प्रतिष्ठा कम हो सकती है, आप पर कोई सरकारी दण्ड लग सकता है तथा धन, व्यवसाय, खेती एवं भूमि आदि में हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे या सातवें भाव का स्वामी है। आप रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

उपाय-

- 1- शिवसहस्रनाम का जप करें।
- 2- गाय एवं सोना दान करें।
- 3- रोज ॐ नमः शिवाय तथा ॐ नमो नारायणाय मंत्र का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (04:10:2053 से 13:06:2056)

आपकी कुण्डली में शनि पाप ग्रह के साथ स्थित है या दृष्ट है या अस्त है या वक्री है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको अपने शत्रुओं से खतरा हो सकता है। आपकी बुद्धि का हास हो सकता है, कार्य या व्यवसाय में हानि हो सकती है, किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं, आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है तथा आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय का जप करें।
- 2- काली गाय एवं गाली भैंस दान करें।
- 3- विष्णु की आराधना करें एवं ॐ नमो नारायणाय मंत्र का जप करें।
- 4- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप नीलम या फिरोजा धारण कर सकते हैं।

केतु दशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

केतु अर्न्तदशा (13:06:2056 से 10:11:2056)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, यदि इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गासप्तशती पाठ एवं महामृत्युंजय जप करें।
- 2- शंकर, दुर्गा एवं गणेश की आराधना करें।

शुक्र अर्न्तदशा (10:11:2056 से 10:01:2058)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
- 2- गाय या भैंस का दान करें।
- 3- गणेश-लक्ष्मी या दुर्गा-शिव की आराधना करें।
- 4- स्फटिक की माला धारण करें।
- 5- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप हीरा, सफेद मूंगा, स्फटिक या सफेद पुखराज धारण कर सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा (10:01:2058 से 17:05:2058)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- सूर्य, शिव एवं गणेश की आराधना करें।
- 2- सोना एवं गाय दान करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (17:05:2058 से 16:12:2058)

आपकी कुण्डली में चंद्रमा क्षीण है या नीच राशि में स्थित है।

चंद्रमा की अंतर्दशा के दौरान आपके सुख में कमी हो सकती है, कार्यों में बाधा आ सकती है, माता-पिता से वियोग हो सकता है, आपको शारीरिक या मानसिक कष्ट हो सकता है तथा आपके व्यवसाय एवं पशुओंकी हानि हो सकती है। आपको धन हानि हो सकती है तथा भाई-बन्धुओं से मतभेद हो सकता है।

उपाय-

- 1- चंद्रमा का जप एवं दान करें।
- 2- गणेश, शिव एवं पार्वती की आराधना करें।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2058 से 14:05:2059)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- बैल दान करें।
- 2- गणेश, दुर्गा एवं हनुमान की आराधना करें।

राहु अर्न्तदशा (14:05:2059 से 01:06:2060)

आपकी कुण्डली में राहु लग्न से आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है या दृष्ट है।

राहु की अंतर्दशा के दौरान आप मूत्र रोग, गुर्दा रोग एवं ज्वर आदि से पीड़ित हो सकते हैं। आपको विष से खतरा हो सकता है।

उपाय-

- 1- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
- 2- दुर्गा एवं गणेश की आराधना करें।

गुरु अर्न्तदशा (01:06:2060 से 08:05:2061)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति लग्न या केतु से छठे, आठवें या बारहवें भाव में नीच राशि में स्थित है या अस्त है या पाप ग्रह के साथ स्थित है।

बृहस्पति की अंतर्दशा के दौरान आपको चोर, डाकू एवं सांप से खतरा हो सकता है। धन की हानि हो सकती है। आप किसी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे या सातवें भाव का स्वामी है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

उपाय-

- 1- शिव सहस्रनाम एवं महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 2- गणेश, शिव एवं विष्णु की आराधना करें।

शनि अर्न्तदशा (08:05:2061 से 17:06:2062)

आपकी कुण्डली में शनि केतु से छठे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है, कार्य में बाधाएं आ सकती हैं, आपकी

प्रतिष्ठा में कमी हो सकती है, आप आलसी हो सकते हैं तथा माता-पिता से वियोग हो सकता है।

उपाय-

- 1- तिल से होम करें।
- 2- काली गाय या भैंस दान करें।
- 3- गणेश, काली एवं विष्णु की आराधना करें।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2062 से 14:06:2063)

आपकी कुण्डली में बुध केतु से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है।

बुध की अंतर्दशा के दौरान सत्तापक्ष से आपका विरोध हो सकता है, धन-संपत्ति की हानि हो सकती है तथा दूसरे के घर में निवास कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- 2- गणेश एवं विष्णु की आराधना करें।
- 3- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप हरा पन्ना धारण कर सकते हैं।

शुक्र दशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

शुक्र अर्न्तदशा (14:06:2063 से 13:10:2066)

आमतौर पर आप इस महादशा/अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, यदि इस महादशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गापाठ करें।
- 2- गाय दान करें।
- 3- शिव एवं लक्ष्मी की आराधना करें।
- 4- आपका लग्न वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप हीरा या सफेद पुखराज, सफेद मूंगा धारण कर सकते हैं।

सूर्य अर्न्तदशा (13:10:2066 से 13:10:2067)

आपकी कुण्डली में सूर्य नीच राशि में या पाप ग्रह के साथ स्थित है या दृष्ट

है।

सूर्य की अंतर्दशा के दौरान आपको कष्ट हो सकता है, आप सरकारी अधिकारियों के कोप का भाजन बन सकते हैं, रोग ग्रस्त हो सकते हैं तथा खेती एवं व्यवसाय में हानि हो सकती है।

उपाय-

1- सूर्य की आराधना करें।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (13:10:2067 से 14:06:2069)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1- सफेद गाय दान करें।

2- शिव एवं पार्वती की आराधना करें।

मंगल अन्तर्दशा (14:06:2069 से 14:08:2070)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1- बैल दान करें।

2- शिव, दुर्गा एवं हनुमान की आराधना करें।

राहु अन्तर्दशा (14:08:2070 से 14:08:2073)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

1- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

2- शिव एवं दुर्गा की आराधना करें।

गुरु अन्तर्दशा (14:08:2073 से 13:04:2076)

आमतौर पर आप इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय जप करें।
- 2- शिव एवं विष्णु की आराधना करें।

शनि अर्न्तदशा (13:04:2076 से 14:06:2079)

आपकी कुण्डली में शनि शुक्र से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको कई प्रकार के कष्ट हो सकते हैं। परिवार में कलह हो सकता है, किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं तथा व्यवसाय, खेती, पशु एवं धन की हानि हो सकती है।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय जप एवं दुर्गासप्तशती पाठ करें।
- 2- शिव एवं हनुमान की आराधना करें।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2079 से 14:04:2082)

आपकी कुण्डली में बुध लग्न से छटे, आठवें या बारहवें भाव में अस्त है या पाप ग्रह के साथ स्थित है। आपको व्यवसाय में हानि हो सकती है।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का जप करें।
- 2- विष्णु एवं लक्ष्मी की आराधना करें।
- 3- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह, कन्या या तुला है। आप पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (14:04:2082 से 14:06:2083)

आपकी कुण्डली में केतु शुक्र से छटे, आठवें या बारहवें भाव में पाप ग्रह के साथ स्थित है।

केतु की अंतर्दशा के दौरान आपको चोर, डाकू, सांप, विष, आग, अस्त्र तथा आपराधिक किस्म के लोगों से खतरा हो सकता है। आपके सिर में अक्सर दर्द हो सकता है, आप बेवजह आपसी कलह में फंस सकते हैं, आपके खर्च अधिक हो सकते हैं, किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं तथा आपके कामों में हानि हो सकती है।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय का जप करें।
- 2- शिव, गणेश एवं पार्वती की आराधना करें।

सूर्य दशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

सूर्य अर्न्तदशा (14:06:2083 से 01:10:2083)

आपकी कुण्डली में सूर्य पापी ग्रहों के साथ स्थित है।

आपकी कुण्डली में सूर्य छटे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है।

सूर्य की महादशा या अंतदशा आपके लिए कष्टकारी होगी। सूर्य की महादशा या अंतदशा के दौरान आपको धन हानि हो सकती है, किसी प्रकार का दंड लग सकता है, आपकी बदनामी हो सकती है, आपकेपिता को कष्ट हो सकता है, आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकते हैं, भाई-बन्धुओं से मतभेद हो सकता है तथा आपको अपने काम में नुकसान हो सकता है।

उपाय-

1- मृत्युंजय जप करें। भगवान सूर्य एवं शिव की पूजा करें तथा इनके जप एवं दान करें।

चंद्रमा अर्न्तदशा (01:10:2083 से 01:04:2084)

आपकी कुण्डली में चंद्रमा क्षीण है या पापी ग्रहों के साथ स्थित है या चंद्रमा पर पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है।

यह अंतदशा आपके लिए कष्टप्रद हो सकती है। आपके जीवनसाथी या संतान को कष्ट हो सकता है, आपको शारीरिक एवं मानसिक कष्ट हो सकता है। आपके कामों में हानि, अधीनस्थों से मतभेद, धन हानि, लोगों से विवाद, स्थान परिवर्तन जैसे अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय-

- 1- सफेद गाय दान करें।
- 2- शिव एवं पार्वती की पूजा करें तथा स्फटिक की माला धारण करें।
- 3- स्फटिक की माला पर रोज 108 बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।
- 4- आपका लग्न मेष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक या मीन है। आप चंद्रमा की अंतर्दशा के दौरान सोमवार को चांदी की अंगुठी में सफेद मोती धारण कर सकते हैं।

मंगल अर्न्तदशा (01:04:2084 से 07:08:2084)

आमतौर पर इस अंतदशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- वेद पाठ करें एवं बैल दान करें।
- 2- लाल चंदन की माला धारण करें एवं इसी माला से गायत्री मंत्र का जप करें।

राहु अर्न्तदशा (07:08:2084 से 02:07:2085)

आमतौर पर इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गापाठ करें तथा काली गाय का दान करें।
- 2- दुर्गा एवं हनुमान की पूजा करें।
- 3- राहु के लिए कोई रत्न धारण नहीं करें।

गुरु अर्न्तदशा (02:07:2085 से 20:04:2086)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति लग्न या सूर्य से छटे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है।

बृहस्पति की अंतर्दशा के दौरान आप रोग, मानसिक चिन्ता एवं कष्ट से परेशान हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी एवं संतान को कष्ट हो सकता है, धन हानि एवं कार्य हानि हो सकती है तथा सरकारी अधिकारियों के कोप का भाजन बन सकते हैं।

उपाय-

- 1- सोना एवं कपिला गाय का दान करें।
- 2- अपने इष्टदेव की पूजा करें।
- 3- भगवान विष्णु एवं शिव की पूजा करें।

शनि अर्न्तदशा (20:04:2086 से 02:04:2087)

आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रह के साथ या नीच राशि में स्थित है।

शनि की अंतर्दशा के दौरान आपको रोग, काम में हानि, धन हानि, पारिवारिक कलह, स्वजनों से वियोग आदि जैसे अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

उपाय-

- 1- काली गाय या भैंस दान करें।
- 2- महामृत्युंजय जप करें।
- 3- रुद्र-शिव या रुद्रावतार हनुमान एवं महाकाली की आराधना करें।

बुध अर्न्तदशा (02:04:2087 से 06:02:2088)

आमतौर पर इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस

अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें एवं चांदी की विष्णु प्रतिमा दान करें।
- 2- आपका लग्न वृष, मिथुन, सिंह या कन्या है। आप कनिष्ठिका अंगुली में पन्ना धारण कर सकते हैं।

केतु अर्न्तदशा (06:02:2088 से 13:06:2088)

आमतौर पर इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- दुर्गा का जाप एवं शतचंडी पाठ करें।
- 2- गणेश की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (13:06:2088 से 14:06:2089)

आमतौर पर इस अंतर्दशा के दौरान किसी गंभीर समस्या का सामना नहीं करेंगे। फिर भी, अगर इस अंतर्दशा के दौरान कोई परेशानी हो रही है, तो दशा के अशुभ प्रभावों को कम करने एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आप ज्योतिषीय परामर्श से अग्रलिखित उपायों को कर सकते हैं।

उपाय-

- 1- मृत्युंजय जाप एवं रूद्र जाप करें। गाय या भैंस का दान करें।
- 2- आपका लग्न वृष, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ है। आप हीरा या सफेद पुखराज या सफेद मूंगा धारण कर सकते हैं।

विंशोत्तरी दशा से भविष्यफल और उपाय (लाल किताब)

चन्द्रमा दशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन-संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- चाँदी की अंगूठी में मोती धारण करें।
- 2- चाँदी का कमल दान करें।
- 3- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (18:12:1973 से 14:04:1975)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई-बन्धु, कर्जआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
- 3- सोने की गाय या भैंस का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (14:04:1975 से 13:09:1976)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
- 2- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- बकरी का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (13:09:1976 से 14:04:1977)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- केतु के बीज मंत्र का 21 दिनों में सतरह हजार जप करें।
- 2- सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- 3- गणपति के 108 नामों का जप करें।

शुक्र अर्न्तदशा (14:04:1977 से 13:12:1978)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, सरकारी कार्य, मित्र,

परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शुक्रवार को एक गड़दा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
- 2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 3- चाँदी की दुर्गा-मूर्ति दान करें।

सूर्य अर्न्तदशा (13:12:1978 से 14:06:1979)

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- 2- भगवान शिव की पूजा करें।
- 3- आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल दशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन-सम्पत्ति, रक्त, परिवार, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- ताँबे का कड़ा पहनें।
- 2- ताँबे का कमल दान करें।
- 3- मंगलवार का व्रत करें।

मंगल अर्न्तदशा (14:06:1979 से 10:11:1979)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खून, वाहन, दुर्घटना, विषैले जीव, आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 43 दिनों में मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
- 2- शिव चालीसा का पाठ करें।
- 3- हनुमान चालीसा का पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (10:11:1979 से 28:11:1980)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या वाहन दुर्घटना, धन-संपत्ति, कचहरीआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- ब्राह्मणों को मिठाई के साथ भोजन करायें एवं दक्षिणा दें।
- 2- चाँदी का नाग दान

करें।

3- रसोई में बैठकर भोजन करें।

गुरु अर्न्तदशा (28:11:1980 से 04:11:1981)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मुकदमा, सरकारी कार्य, धन-संपत्ति, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- रोज बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- शिवसहस्रनाम का पाठ एवं हवन करें।
- 3- पका हुआ सीताफल- जो अन्दर से खोखला हो- किसी मंदिर आदि में रखें।

शनि अर्न्तदशा (04:11:1981 से 13:12:1982)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, पारिवारिक कलह, नौकरी या व्यापार, संतान, व्यसन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- काली गाय दान करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- बजरंगबाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (13:12:1982 से 10:12:1983)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या सम्मान, मुकदमा, आग, वाहन दुर्घटना, धन-संपत्ति, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- रोज शिवलिंग पर जल चढायें।
- 2- चाँदी की घोड़ी दान करें।
- 3- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

केतु अर्न्तदशा (10:12:1983 से 08:05:1984)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, खून, धन-संपत्ति, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- केतु स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

शुक्र अर्न्तदशा (08:05:1984 से 08:07:1985)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, व्यसन, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए

आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।
- 2- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
- 3- शुक्रवार को सफेद गायों को चारा डालें।

सूर्य अर्न्तदशा (08:07:1985 से 13:11:1985)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन-हानि, जीवनसाथी, संतान, विषैले जीव, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
- 2- आदित्यहृदयस्तोत्र का पाठ करें।
- 3- तांबे के सात चौरस टुकड़ों पर केसर का तिलक लगाकर गुलाबी रंग के कपड़े में बांध लें और सूर्योदयके बाद पूर्व की ओर मुंह करके जंगल में दबायें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (13:11:1985 से 14:06:1986)

वर्तमान में आप मंगल की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन-सम्पत्ति, जीवनसाथी, संतान, पालतू पशु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सफेद गाय का दान करें।
- 2- शंख या सीप में 21 चावल के दाने भरकर अमावस्या के दिन नदी में प्रवाहित करें।
- 3- दुर्गा एवं लक्ष्मी की पूजा करें।

राहु दशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

वर्तमान में आप राहु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन-संपत्ति, लड़ाई-झगड़ा, विदेश निवास आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सप्त धान्य (उड़द, मूंग, गेहूं, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
- 2- स्वर्ण पात्र या सोने का साँप दान करें।
- 3- राहु के बीज मंत्र का जप करें।

राहु अर्न्तदशा (14:06:1986 से 24:02:1989)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, धन-सम्पत्ति, मान-सम्मान, कर्ज, परिवारजन, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- दो नारियल एवं सिक्के के दस टुकड़े नदी में प्रवाहित करें।
- 2- चाँदी का नाग-नागिन दान

करें।

3- नृसिंह कवच का पाठ करें।

गुरु अर्न्तदशा (24:02:1989 से 20:07:1991)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, जीवनसाथी, संतान, हृदय, वाहन दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- बृहस्पतिवार से शुरू कर लगातार 43 दिनों तक अपनी नाभि के चारों ओर केसर का तिलक लगायें।
- 2- शिवसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
- 3- जल से शिव का रुद्राभिषेक करें।

शनि अर्न्तदशा (20:07:1991 से 26:05:1994)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, हृदय, गृहस्थ जीवन आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 2- काली गाय या भैंस का दान करें।
- 3- शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (26:05:1994 से 13:12:1996)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यापार, जीवनसाथी, सांस आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- गोपालसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
- 3- लगातार 43 दिन छोटी कन्याओं को मिठाई खिलायें।

केतु अर्न्तदशा (13:12:1996 से 31:12:1997)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, माता, पिता, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सर्पाकार चाँदी की अंगुठी पहनें।
- 2- गणपतिसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
- 3- गणेश चतुर्थी को गणेश जी की पूजा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (31:12:1997 से 31:12:2000)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, पिता, नौकरी,

मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शुक्र के बीज मंत्र का 21 दिनों में सोलह हजार जप करें।
- 2- श्रीसूक्त का पाठ करें।
- 3- शुक्रवार को नीम के तने में चाँदी का नौ वर्गाकार टुकड़े दबायें।

सूर्य अर्न्तदशा (31:12:2000 से 25:11:2001)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या आग, वाहन दुर्घटना, जमीन-जायदाद, धन-संपत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 11 रविवार को गेहूं, गुड़ एवं तांबे का टुकड़ा दान करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- दो नारियल एवं सौ ग्राम जौ 5 शनिवार को नदी में प्रवाहित करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (25:11:2001 से 26:05:2003)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, धन-संपत्ति, व्यापार यानौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सोमवार को दूध में सफेद फूल डालकर शिवलिंग पर चढ़ायें।
- 2- चाँदी की गाय दान करें।
- 3- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

मंगल अर्न्तदशा (26:05:2003 से 13:06:2004)

वर्तमान में आप राहु की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- ऋणमोचनस्तोत्र का पाठ करें।
- 2- सुन्दरकांड का पाठ करें।
- 3- मंगलवार को तंदूर वाली आठ मीठी रोटी कुत्तों को डालें।

गुरु दशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या भूमि, वाहन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- बृहस्पति के बीज मंत्र का जप करें।
- 2- सोना या पुखराज का दान करें।
- 3- बृहस्पतिवार को बृहस्पति के नक्षत्र में सोने की अंगुठी में पुखराज धारण करें।

गुरु अर्न्तदशा (13:06:2004 से 01:08:2006)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवारजन, जीवनसाथी, संतान, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- जल से शिव का रुद्रामिषेक करें।
- 2- शिवसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- पूर्णिमा व्रत रखें एवं सत्यनारायण की कथा करें।

शनि अर्न्तदशा (01:08:2006 से 12:02:2009)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, व्यवसाय, भाई-बन्धु, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सात शनिवार को सात सौ ग्राम काले चने की दाल काली भैंस को खिलायें।
- 2- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- काली गाय या भैंस का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (12:02:2009 से 20:05:2011)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-सम्पत्ति, साझेदार, व्यवसाय, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- नाक छेदन करायें।
- 2- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- काली बकरी का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (20:05:2011 से 25:04:2012)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-सम्पत्ति, पिता, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- रोज केतु के बारह नामों का जप करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- 3- 11 बृहस्पतिवार को पीपल के पेड़ की प्रदक्षिणा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (25:04:2012 से 25:12:2014)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक सम्पत्ति, नौकरी, जीवनसाथी, भाई-बन्धु, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शुक्र के बीज मंत्र का जप करें।
- 2- सफेद गाय या भैंस का दान करें।
- 3- दुर्गासूक्त का पाठ करें।

सूर्य अर्न्तदशा (25:12:2014 से 13:10:2015)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या आँख, भाई-बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
- 2- आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें।
- 3- जल में लाल फूल डालकर लगातार 43 दिन सूर्य को चढ़ायें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (13:10:2015 से 12:02:2017)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, नौकरी, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।
- 2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 3- सोना या चाँदी का चंद्रमा दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (12:02:2017 से 19:01:2018)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, घर, जीवनसाथी, खून आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- मंगल का व्रत रखें एवं मंगल के बीज मंत्र का 21 दिनों में दस हजार जप करें।
- 2- हनुमान जी के 108 नामों का जप करें।
- 3- रात में अपने सिरहाने तांबे के बर्तन पानी भरकर रखें और सुबह वट वृक्ष में डालें।

राहु अर्न्तदशा (19:01:2018 से 13:06:2020)

वर्तमान में आप बृहस्पति की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पारिवारिक कलह, पैतृक सम्पत्ति, भाई-बन्धु, व्यापार, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- राहु के नक्षत्र वाले दिन से लगातार 43 दिन जौ की आटे की गोलियां मछलियों को डालें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- चाँदी का 51 ग्राम का हाथी दान करें।

शनि दशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

वर्तमान में आप शनि की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन-संपत्ति, वाहन दुर्घटना, भौतिक सुख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शनि का व्रत रखें एवं शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- नीलम, लोहा, तिल एवं सरसों का तेल दान करें।
- 3- शनि के बीज मंत्र का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मान-सम्मान, नौकरी, परिवारजन, जीवनसाथी, कर्ज, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 21 शनिवार को सात बादाम एवं सात सौ ग्राम काली उड़द की दाल किसी धर्मस्थल में या मांगने वालेको दान दें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
- 3- रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2023 से 24:02:2026)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, नौकरी या व्यवसायआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- बुध के बीज मंत्र का 17 दिनों में नौ हजार जप करें।
- 2- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- बकरी या अन्न का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (24:02:2026 से 05:04:2027)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, दुर्घटनाआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- आठ सौ ग्राम सफेद तिल एवं आठ सौ ग्राम काला तिल गंगा में प्रवाहित करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (05:04:2027 से 05:06:2030)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, आँख, नौकरी, मान-सम्मान, भाई-बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शुक्र के बीज मंत्र का सोलह हजार जप करें।
- 2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 3- सफेद गाय या भैंस का दान करें।

सूर्य अर्न्तदशा (05:06:2030 से 17:05:2031)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, मान-सम्मान, भाई-बन्धु, धन-सम्पत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
- 2- रविवार का व्रत रखें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- 3- अरुणसहस्रनाम का पाठ करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (17:05:2031 से 16:12:2032)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, धन हानि, संतान आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- तिल से हवन करें तथा गुड़, घी, दही-चावल, सफेद गाय आदि का दान करें।
- 2- शिव की उपासना करें एवं शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें।
- 3- दुर्गा की पूजा करें।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2032 से 25:01:2034)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, कर्ज, नौकरी, जीवनसाथी, भाई-बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- ऋण के लिए ऋणमोचन स्तोत्र का पाठ करें। सामान्य कष्टों बजरंग बाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- 2- शांति हवन तथा बैल का दान करें।
- 3- भुजंग स्तोत्र का पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (25:01:2034 से 01:12:2036)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवार, मित्र, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- अनुष्ठान सहित राहु के बीज मंत्र का अठारह हजार जप करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- बकरी का दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (01:12:2036 से 14:06:2039)

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या संबंधी, नौकरी, व्यापार, जीवनसाथी, संतान, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सोने का दान करें।
- 2- शिवसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- भगवान सत्यनारायण की कथा करें।

बुध दशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

वर्तमान में आप बुध की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या मित्र, परिवार, धन-संपत्ति, मान-सम्मान, खेती, संतान, विद्या आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- बुधवार का व्रत रखें एवं बुध के बीज मंत्र का जप करें।
- 2- साने का पात्र दान करें।
- 3- बुधवार या बुध के नक्षत्र में पन्ना धारण करें।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2039 से 10:11:2041)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, नौकरी, व्यापार, परिवारजन, भाई-बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- बुध स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- बकरी की सेवा करें।
- 3- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

केतु अर्न्तदशा (10:11:2041 से 07:11:2042)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- केतु के नक्षत्र में लहसुनिया मध्यमा अंगुली में धारण करें।
- 2- गणपतिस्तोत्र का पाठ करें।
- 3- काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (07:11:2042 से 07:09:2045)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, मान-सम्मान, भाई-बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- चाँदी की गाय दान करें।
- 2- लक्ष्मीनारायण हृदय का पाठ करें।
- 3- दुर्गा की पूजा करें।

सूर्य अर्न्तदशा (07:09:2045 से 14:07:2046)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दुर्घटना, व्यापार, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- रविवार या सूर्य के नक्षत्र में अनामिका अंगुली में माणिक धारण करें।
- 2- तांबे की गाय दान करें।
- 3- लगातार 43 दिन ठीक 12 बजे लाल फूल एवं जल सूर्य को चढ़ायें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (14:07:2046 से 13:12:2047)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मित्र, भाई-बन्धु, सहकर्मी, व्यापार, नौकरी, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- अनुष्ठान सहित चंद्रमा के बीज मंत्र का जप करें।
- 2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 3- सफेद वस्त्र दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (13:12:2047 से 10:12:2048)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आपकिसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, परिवार, मुकदमा, व्यापार, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- मंगल स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
- 3- तांबे का बैल दान करें।

राहु अर्न्तदशा (10:12:2048 से 29:06:2051)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, भाई-बन्धु, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- छोटी कन्याओं को हरे वस्त्र दान करें।
- 2- दो नारियल एवं दस टुकड़े सिक्के बुधवार को जल में प्रवाहित करें।
- 3- सिक्के का हाथी बनाकर गंगाजन में डाल कर घर पर रखें।

गुरु अर्न्तदशा (29:06:2051 से 04:10:2053)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में बृहस्पति की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दुर्घटना, जीवनसाथी, संतान, गृहस्थ जीवन, धन-संपत्ति, पिता, आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शिवसहस्रनाम का पाठ करें।
- 2- धार्मिक पुस्तकों का दान करें।
- 3- गाय का दान करें।

शनि अर्न्तदशा (04:10:2053 से 13:06:2056)

वर्तमान में आप बुध की महादशा में शनि की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यवसाय, धन हानि, जीवनसाथी, संतान, भाई-बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शनिवार या शनि के नक्षत्र में उड़द की दाल के पकौड़े बनाकर काले कुत्तों को खिलायें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- काली गाय या भैंस का दान करें।

केतु दशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

वर्तमान में आप केतु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या मित्र, परिवार, धन-संपत्ति, वाहन, आग, जल, विद्या, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सप्त धान्य (उड़द, मूंग, गेहूं, चना, जौ, चावल, कंगनी) का दान करें।
- 2- चाँदी का पात्र दान करें।
- 3- गणेश चतुर्थी का व्रत रखें।

केतु अर्न्तदशा (13:06:2056 से 10:11:2056)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में केतु की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या स्थान परिवर्तन, आमदनी, कर्ज, मान-सम्मान, जीवनसाथी, संतान, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 2- संकट चतुर्थी का 18 व्रत रखें।
- 3- काले कुत्ते की सेवा करें।

शुक्र अर्न्तदशा (10:11:2056 से 10:01:2058)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में शुक्र की अर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, आमदनी, धन-संपत्ति, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- छोटी कन्याओं को गोल-गप्पे खिलायें।
- 2- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
- 3- सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।

सूर्य अर्न्तदशा (10:01:2058 से 17:05:2058)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, व्यापार, माता, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सात रविवार लाल गाय को हरा चारा डालें।
- 2- तांबे या चाँदी की गाय दान करें।
- 3- सूर्य स्तोत्र का पाठ करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (17:05:2058 से 16:12:2058)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पैतृक संपत्ति, परिवारजन, संबंधी, जीवनसाथी, माता, भाई आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभफलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सफेद गाय का दान करें।
- 2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 3- चंद्रस्तोत्र का पाठ करें।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2058 से 14:05:2059)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, परिवारजन, कर्ज, गृहस्थ जीवन, जीवनसाथी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- चाँदी के बर्तन में शहद भरकर मकान की नींव में दबायें।
- 2- लाल बैल या तांबे का बैल दान करें।
- 3- महामृत्युंजय का पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (14:05:2059 से 01:06:2060)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी या व्यापार, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- अनुष्ठान के साथ राहु के बीज मंत्र का जप करें।
- 2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।
- 3- बुधवार को ग्यारह किलो कच्चा कोयला नदी में प्रवाहित करें।

गुरु अर्न्तदशा (01:06:2060 से 08:05:2061)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि

आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति, व्यवसाय मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 11 पूर्णिमा को व्रत रखें। व्रत के दौरान पीला वस्त्र पहनें।
- 2- अनुष्ठान के साथ शिवसहस्रनाम का जप करें।
- 3- शिवसंकल्प का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (08:05:2061 से 17:06:2062)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, व्यापार, नौकरी, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
- 2- काली गाय या भैंस का दान करें।
- 3- शनिस्तोत्र का पाठ करें।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2062 से 14:06:2063)

वर्तमान में आप केतु की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, नौकरी, संबंधी, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- महासुदर्शन मंत्र का जप करें।
- 2- अनुष्ठान के साथ विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- बकरी दान करें।

शुक्र दशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या जीवनसाथी, संतान, धन-संपत्ति, मित्र आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यंत्र बनाकर अपने पास रखें।
- 2- दुर्गा पाठ करें।
- 3- सफेद वस्तुओं का दान करें।

शुक्र अर्न्तदशा (14:06:2063 से 13:10:2066)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-संपत्ति, भाई-बन्धु, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सफेद गाय का दान

करें।

2- अनुष्ठान के साथ ललितासहस्रनाम का पाठ करें।

3- दुर्गासूक्त का पाठ करें।

सूर्य अर्न्तदशा (13:10:2066 से 13:10:2067)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, पिता, नौकरी, व्यापार, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1- संक्राति के दिन उड़द, मूंगी, गेहूं, चना, जौ, चावल, कंगनी, पुराने कपड़े एवं पैसे दान करें।

2- रविवार या सूर्य के नक्षत्र में माणिक धारण करें।

3- शिव का दूध से रूद्राभिषेक करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (13:10:2067 से 14:06:2069)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, भाई, जीवनसाथी, संतान, माता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1- चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।

2- शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें एवं एक माला ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

3- 11 सोमवार को व्रत रखें एवं दूध-मिश्री दान करें।

मंगल अर्न्तदशा (14:06:2069 से 14:08:2070)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खेत, मकान, नौकरी, वाहन दुर्घटना, धन-सम्पत्ति, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1- मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं हनुमान जी को सिंदूर अर्पित करें।

2- लक्ष्मी कवच का पाठ करें।

3- सुन्दरकांड का 32 पाठ करें।

राहु अर्न्तदशा (14:08:2070 से 14:08:2073)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, परिवारजन, मान-सम्मान, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

1- जौ एवं सरसों को मिट्टी के बर्तन में भरकर बहते पानी में प्रवाहित करें।

2- दुर्गासूक्त का पाठ करें।

3- चाँदी का हाथी दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (14:08:2073 से 13:04:2076)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि

आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, धन-संपत्ति, व्यापार, संतान, स्थान परिवर्तन, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभफलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 11 बृहस्पतिवार को पीला धागा पीपल के पेड़ में लपेटें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।

शनि अर्न्तदशा (13:04:2076 से 14:06:2079)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, मान-सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
- 3- काली गाय का दान करें।

बुध अर्न्तदशा (14:06:2079 से 14:04:2082)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, मान-सम्मान, संबंधी, व्यापार, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- बकरी का दान करें।
- 2- रोज विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- शालिग्राम की पूजा करें एवं तुलसी के तीन या छः पत्ते खायें।

केतु अर्न्तदशा (14:04:2082 से 14:06:2083)

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, स्थान परिवर्तन, जीवनसाथी, संतान, यात्रा, आमदनी, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- काले कुत्ते की सेवा करें।
- 2- मृत्युंजय जप करें।
- 3- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

सूर्य दशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या भाई-बंधु, स्त्री, पुत्र, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- सुबह में ताँबे के बर्तन में सूर्य को अर्घ्य

दें।

- 2- अशुभ फल प्राप्ति के समय सोने का कमल दान करें।
- 3- सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

सूर्य अर्न्तदशा (14:06:2083 से 01:10:2083)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में सूर्य की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- 2- लगातार 43 दिन जल में लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- 3- सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (01:10:2083 से 01:04:2084)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन-सम्पत्ति, कर्ज, शत्रु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह जप करें।
- 2- सफेद गाय का दान करें।
- 3- दुर्गासप्तशती का पाठ करें या करायें।

मंगल अर्न्तदशा (01:04:2084 से 07:08:2084)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-सम्पत्ति, जमीन-जायदाद आदिसे संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 21 मंगलवार को व्रत रखें एवं मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।
- 2- किसी ब्राह्मण को सफेद गाय या चाँदी की गाय दान करें।
- 3- चामुण्डा देवी की पूजा करें।

राहु अर्न्तदशा (07:08:2084 से 02:07:2085)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में राहु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मकान, नौकरी, आग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 21 दिनों में राहु के बीज मंत्र का अठारह हजार जप करें।
- 2- दुर्गासप्तशती का पाठ करें।
- 3- सात काली गाय या भैंस का दान करें।

गुरु अर्न्तदशा (02:07:2085 से 20:04:2086)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, धन-सम्पत्ति

आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- भगवान विष्णु के 108 नामों का जप करें।
- 2- कपिला गाय का दान करें।
- 3- चार या पांच रत्ती का पुखराज धारण करें।

शनि अर्न्तदशा (20:04:2086 से 02:04:2087)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में शनि की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या स्वास्थ्य, संबंधियों, धन-सम्पत्ति, प्रतिष्ठा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शनि स्तोत्र का पाठ करें।
- 2- पंचधातु की अंगुठी तथा काली जुराब दान करें।
- 3- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

बुध अर्न्तदशा (02:04:2087 से 06:02:2088)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में बुध की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन-सम्पत्ति, जीवनसाथी, संतानआदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- 21 दिनों में बुध के बीज मंत्र का नौ हजार जप करें।
- 2- विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- अन्न एवं चाँदी की सूर्य प्रतिमा का दान करें।

केतु अर्न्तदशा (06:02:2088 से 13:06:2088)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में केतु की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या दाँत, पिता, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- काले कुत्ते की सेवा करें।
- 2- गणपतिसहस्रनाम का पाठ करें।
- 3- दुगा सूक्त का पाठ करें।

शुक्र अर्न्तदशा (13:06:2088 से 14:06:2089)

वर्तमान में आप सूर्य की महादशा में शुक्र की अर्न्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, घर-परिवार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय-

- 1- शिवस्तोत्र का पाठ करें।
- 2- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन

करें।

3- सफेद गाय का दान करें।

अनपत्य दोष – प्रभाव और उपाय

ज्योतिष में किसी मनुष्य के पूर्व जन्मों के कर्मों का काफी महत्व होता है। ऐसा माना जाता है कि हर मनुष्य को अपने पिछले जन्मों के कर्मों का भी फल किसी ना किसी रूप में प्राप्त होता है, चाहे वो सुफल हो या कुफल। अर्थात् पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का अच्छा फल एवं बुरे कर्मों का बुरा फल प्राप्त होगा। संतान ना होना, गर्भ नहीं ठहरना, गर्भपात हो जाना या मृत संतान का पैदा होना आदि पूर्व जन्म के बुरे कर्मों का फल हो सकता है। पूर्व जन्म में किसी को किसी भी तरह से सताने पर उसका श्राप इस जन्म में दोष के रूप में सामने आता है, जिसे अनपत्य दोष कहते हैं। इस दोष का सीधा संबंध संतति से होता है।

हालांकि हर दोष का परिहार होता है, जो बुरे प्रभाव को काफी हद तक कम करने में सक्षम होता है।

सर्प-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में किसी सर्प को मारने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में सर्प-शाप लागू नहीं हो रहा है।

पितृ-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने पिता को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में पितृ-शाप लागू नहीं हो रहा है।

मातृ-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपनी माता को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में मातृ-शाप लागू नहीं हो रहा है।

भ्रातृ-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने भाई को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में भ्रातृ-शाप लागू नहीं हो रहा है।

मातुल-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने मामा को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में मातुल-शाप लागू नहीं हो रहा है।

ब्रह्म-शाप

वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में अपने धन या बल के मद में किसी ब्राह्मण को अपमानित करने या सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में ब्रह्म-शाप लागू हो रहा है।

आपकी कुण्डली में धनु या मीन राशि में राहु तथा पाँचवें भाव में बृहस्पति स्थित है। ब्रह्म-शाप के कारण आपको संतान का अभाव हो सकता है या संतानसुख में कमी हो सकती है।

उपाय -

- 1- चान्द्रायण का व्रत करें, ब्राह्मण को भोजन करायें तथा दक्षिणा के साथ गोदान एवं पंचरत्न दान करें।
- 2- गरीब ब्राह्मण, विद्वान एवं छात्रों की यथा संभव मदद करें।

पत्नी-शाप

नारी सदा सम्माननीय होती है। वर्तमान जन्म या पूर्वजन्म में माता, पत्नी या किसी अन्य नारी को सताने या किसी अन्य तरीके से कष्ट पहुंचाने के कारण उनके शाप से संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में पत्नी-शाप लागू नहीं हो रहा है।

प्रेत-शाप

अपने मृत पितरों का श्राद्ध नहीं करने से पितरों की आत्मा मुक्त नहीं हो पाती हैं और प्रेत बन जाती हैं। उन पितरों के शाप के कारण संतानहीनता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में प्रेत-शाप लागू नहीं हो रहा है।

जन्म लग्न आधारित रुद्राक्ष का सुझाव

आपका लग्न कन्या है। आपके लिए चतुर्मुखी रुद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रुद्राक्ष के इष्टदेव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान होने का वर देता है।



चारमुखी रुद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ॐ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपका लग्न कन्या है। आपके लिए षट्मुखी रुद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रुद्राक्ष के इष्टदेव कार्तिकेय हैं। यह सामर्थ्य तथा शासन संबंधी कलाएं प्रदान करता है और विज्ञान, तकनीकी शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सफलता निश्चित करता है।



छःमुखी रुद्राक्ष के तीन मनकों को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ॐ नमः शिवाय कार्तिकेय नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रुद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं—

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह— उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह— मध्यम
आषाढ एवं श्रावण माह— अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)— अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम—राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।
रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें।

पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्धजल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण—प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी—देवताओं का आह्वान कर रुद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान कराएँ, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान कराएँ। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनाएँ और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें —

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—
ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ
बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय
नमः।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें —

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें —

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें —

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

चतुर्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग —

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः, सिद्धयर्थे
रूद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास —

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः
गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास —

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां
नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ई करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ कां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा का ध्यान करें।

**प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमिश्रम् ॥**

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ वां कां तां हां इं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं हूं नमः

३-ॐ ह्रीं

४-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

५-ॐ नमः शिवाय

६-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात् ।

षट्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्री षष्ठमुखी देवता, ऐं बीजं, साँ शक्तिः, क्लीं कीलकं, रूद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय

नमो गुह्ये, सौं शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव भगवान कार्तिकेय का ध्यान करें।

क्रौञ्चपर्वतविदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः।

चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्ण्डानन जगत्परिपाहि।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं नमः

३-ॐ हुम्

४-ॐ हूं नमः

५-ॐ ह्रीं हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

**मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥**

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।

अभिमान ना करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरुपयोग ना करें।

क्रोध ना करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द ना कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।

गंदगी से दूर रहें।

रुद्राक्ष के प्रति निष्ठा

रखें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूँटी पर ना लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

विशेष नोट-

असली रुद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रुद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रुद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार व दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

**भद्राक्ष के लिए मंत्र
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।**

**भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।**

रुद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 -

पानी की उपरी सतह पर रुद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रुद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रुद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 -

असली रुद्राक्ष बहुत उष्ण होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रुद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगीं। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 -

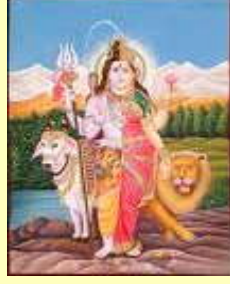
एक कप दूध के अन्दर रुद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होताहै, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

जन्म नक्षत्र के आधार पर रूद्राक्ष का सुझाव

आपका जन्म नक्षत्र हस्ता है। आपके लिए दोमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्ट देव अर्धनारीश्वर हैं। ये दो व्यक्तियों के निरंतर एकता को निश्चित करते हैं। जैसे ज्ञानप्राप्ति के लिए गुरु-शिष्य की और परिवार में खुशहाली के लिए पति-पत्नी की एकता।



दोमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को दायें हाथ से शिवलिंग या मां भगवती के चरणों से छुआकर ॐ अर्धनारीश्वर देवाय नमः का जप करते हुए धारण करना चाहिए।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं—

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह— उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह— मध्यम
आषाढ एवं श्रावण माह— अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)— अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र—

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्धजल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान करायें, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें—

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

**ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।**

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें —

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविक्रणाय नमः, ॐ बलविक्रणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें —

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें —

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

चंदन का लेप करने पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें —

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

दोमुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

**अस्य श्री देवदेवेश मंत्रस्य अत्रि ऋषिः, गायत्री छन्दः, देवदेवेशो देवता, क्षां शक्तिः, चतुर्वर्गसिद्धयर्थे
रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

**ॐ अत्रि ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, देवदेवेश देवतायै नमः, हृदि क्षीं बीजाय
नमः, गुह्ये क्षीं शक्तये नमः, पादयो विनियोगाय नमः सर्वांगे।**

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

**ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्षीं अनामिकाभ्यां
नमः, ॐ व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

**ॐ हृदयाय नमः, ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्षीं कवचाय हुम्। ॐ व्रीं
नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट्।**

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रुद्राक्ष के इष्ट देव त्रिनेत्री, नीलकंठ वाले, चंद्रकांति समान, अभयमुद्राधारी, चक्र, धनुष, चंद्रमा को धारण करने वाले भगवान अर्धनारीश्वर शिव का ध्यान करें।

**तपनसोमहुताशनलोचनं घनसमानगलं शशिसुप्रभम्।
अभय-चक्रपीनाकवशन्करैर्दधतमिन्दुधरं गिरीशं भजेत् ॥**

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रुद्राक्ष पर जल छीटें एवं रुद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ श्रीं

नमः

२-ॐ खम्

३-ॐ ॐ नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

४-ॐ नमः

५-ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं वीं ॐ (मूल मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।

श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।

अभिमान ना करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।

क्रोध ना करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द ना कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन

करें।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।

गंदगी से दूर रहें।

रुद्राक्ष के प्रति निष्ठा रखें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूँटी पर ना लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

विशेष नोट-

असली रुद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रुद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रुद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार व दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

**भद्राक्ष के लिए मंत्र
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।**

**भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।**

रुद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 -

पानी की उपरी सतह पर रुद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रुद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह

तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

जन्म राशि के आधार पर रुद्राक्ष का सुझाव

आपकी जन्म राशि कन्या है। आपके लिए चतुर्मुखी रुद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रुद्राक्ष के इष्टदेव ब्रह्मा हैं। यह परिवार उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ाने की क्षमता प्रदान करता है और आयुष्मान होने का वर देता है।



चारमुखी रुद्राक्ष को बृहस्पतिवार के दिन लाल धागे में पिरोकर सूर्योदय के बाद केले के पौधे से छुआकर ॐ ब्रह्मा देवाय नमः मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

आपकी जन्म राशि कन्या है। आपके लिए षट्मुखी रुद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रुद्राक्ष के इष्टदेव कार्तिकेय हैं। यह सामर्थ्य तथा शासन संबंधी कलाएं प्रदान करता है और विज्ञान, तकनीकी शिक्षा एवं शल्य चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सफलता निश्चित करता है।



छःमुखी रुद्राक्ष के तीन मनकों को लाल धागे में पिरोकर सोमवार को शिवलिंग से छुआकर ॐ नमः शिवाय कार्तिकेय नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें।

रुद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं—

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह— उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह— मध्यम
आषाढ एवं श्रावण माह— अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)— अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम—राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।
रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें।

पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्धजल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रुद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान कराएँ, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान कराएँ। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनाएँ और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें —

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद् भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रूद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—
ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ
बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय
नमः।

फिर रूद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें —

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रूद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें —

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

चंदन का लेप करने पश्चात रूद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें —

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

चतुर्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग —

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री ब्रह्म मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, ब्रह्मा देवता, वां बीजं, क्रां शक्तिः, सिद्धयर्थे
रूद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास —

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, ब्रह्मदेवतायै नमः हृदि, वां बीजाय नमः
गुह्ये, क्रां शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास —

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तां अनामिकाभ्यां
नमः, ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ई करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ कां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्। ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव ब्रह्मा का ध्यान करें।

**प्रणम्य शिरसा शाश्वदष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ।
गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमिश्रम् ॥**

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छोटाकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ वां कां तां हां इं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं हूं नमः

३-ॐ ह्रीं

४-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

५-ॐ नमः शिवाय

६-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

षट्मुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्ति छन्दः, श्री षष्ठमुखी देवता, ऐं बीजं, साँ शक्तिः, क्लीं कीलकं, रूद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय

नमो गुह्ये, सौं शक्तये नमः पादयो, क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र सेदायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव भगवान कार्तिकेय का ध्यान करें।

क्रौञ्चपर्वतविदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः।

चूतपल्लवशिरोमणिचोदी भोष्ण्डानन जगत्परिपाहि।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं नमः

३-ॐ हुम्

४-ॐ हूं नमः

५-ॐ ह्रीं हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रूद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रूद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रूद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रूद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।

श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।

अभिमान ना करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरुपयोग ना करें।

क्रोध ना करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द ना कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।

गंदगी से दूर रहें।

रुद्राक्ष के प्रति निष्ठा

रखें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूँटी पर ना लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

विशेष नोट-

असली रुद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रुद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रुद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार व दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

**भद्राक्ष के लिए मंत्र
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।**

**भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।**

रुद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 –

पानी की उपरी सतह पर रुद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रुद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रुद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 –

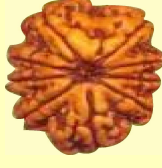
असली रुद्राक्ष बहुत उष्ण होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रुद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रुद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

जन्म तिथि के आधार पर रूद्राक्ष का सुझाव

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है। इसलिए आपके लिए नौमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।



इस रूद्राक्ष के इष्टदेव शक्ति हैं। हालांकि ये नवरात्र (दशहरा या दुर्गापूजा) के दौरान दुर्बल होते हैं। ये उर्जा और शक्ति प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से हमें धन की प्राप्ति होती है तथा सभी कार्यों में हम सफलता प्राप्त करते हैं।



नौमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर सोमवार के दिन स्नान-ध्यान करने के बाद मां दुर्गा के चरणों से छुआकर ॐ दुर्गायै नमः मंत्र का जप करते हुए गले में धारण करें। गले में धारण करने से कष्टों का निवारण होता है एवं अष्टसिद्धि प्राप्त होती है।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय



सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अतिरिक्त, रूद्राक्ष धारण करने के लिए निम्नलिखित शुभ समय हैं—

शुभ महीना/माह

आश्विन एवं कार्तिक माह— उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह— मध्यम
आषाढ एवं श्रावण माह— अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास)— अशुभ।

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष

में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णामसी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, राहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी, एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि



प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत्त होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुंह से जप करने से उचित फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

**मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिह्वा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ॥**

इसके बाद स्नान के लिए यथा संभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा प्रारम्भ करने से पहले भूमि शुद्धि अवश्य करें। भूमि शुद्धि मंत्र—

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्धजल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारे देवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रूद्राक्ष को स्नान कराएँ, फिर गंगाजल या शुद्ध जल से पुनः स्नान कराएँ। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनाएँ और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रूद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जप करें—

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥**

**ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ
मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।**

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें—

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें —

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।

भवे भवेनाति भवे भावस्वमान भवोद्भवाय नमः ॥

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें—

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें —

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्योः घोर घोरतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें —

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

चंदन का लेप करने पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें —

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ।

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

नवमुखी रुद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, श्री भैरवो देवतायै नमः हृदि, वं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों को स्पर्श करें।

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमो मुखे, श्री भैरवो देवतायै नमः हृदि, वं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल-करपृष्ठ का स्पर्श करें।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ वं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ यं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ रं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ लं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर दोनों भुजाओं एवं आंखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी व मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ वं शिखायै वषट्, ॐ यं कवचाय हुम्। ॐ रं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ लं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देवी शक्ति (माँ दुर्गा) का ध्यान करें।

**कपालहस्तं धुलगोपवीतं कृष्णलविं दण्डधरं त्रिनेत्रम् ।
अचिन्त्यमाद्यमनुपानमत्तं हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम् ॥**

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्तन में रूद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायें हाथ पात्र के नीचे छोड़कर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छीटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रीं वँ यँ रँ लँ (मूल मंत्र)

२-ॐ ह्रीं नमः

३-ॐ जूम्

४-ॐ हं नमः

५-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)

६-ॐ नमः शिवाय

७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

रुद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदन का लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव का ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजा स्थल पर रख सकते हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए –

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।

श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ॥

रुद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या अन्य कोई तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रुद्राक्ष को दिखावे की चीज ना बनायें।

रात में रुद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सबुह सारे क्रिया-कर्म से निवृत्त होकर ॐ नमः शिवाय का पांच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजा स्थल पर ही रखें।

अभिमान ना करें।

परोपकार करें।

रुद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग ना करें।

क्रोध ना करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द ना कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन

करें।

रुद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि ना लगायें।

रुद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रुद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत्त होकर एवं पवित्र होकर ही रुद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निन्दा ना करें।

गंदगी से दूर रहें।

रुद्राक्ष के प्रति निष्ठा रखें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर ना लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर ना जायें।

विशेष नोट-

असली रुद्राक्ष गर्म होता है। इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रुद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रुद्राक्ष जैसा ही होता है, लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार व दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

**भद्राक्ष के लिए मंत्र
ओऽम् गौरी शंकराय नमः।**

**भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्र
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।**

रुद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जांच

जांच संख्या 1 -

पानी की उपरी सतह पर रुद्राक्ष रखने से यदि यह डूब जाता है, तो रुद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह

तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष नकली है।

जांच संख्या 2 –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता है और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तांबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटकाकर तांबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेंगे। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है, तो ये असली हैं।

जांच संख्या 3 –

एक कप दूध के अन्दर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखें। यदि दूध खराब नहीं होता है, तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो यह झूठा है।

मांगलिक दोष और उपाय – लाल किताब



लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति के अनुसार आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष लागू हो रहा है।

आठवें भाव में स्थित मंगल का दाम्पत्य जीवन पर असर –

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत ज्यादा आदर्शवादी और आलसी हो सकते हैं। आपकी आदर्शवादिता आपके दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण होगी।

मांगलिक दोष निवारण के सामान्य उपाय :

1. हनुमान चालीसा का पाठ करें।
2. हनुमान जी को प्रसाद चढ़ायें।
3. हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ायें।
4. गायत्री का पाठ करें।
5. दुर्गा का पाठ करें।
6. रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।
7. लाल रुमाल पास में

रखें।

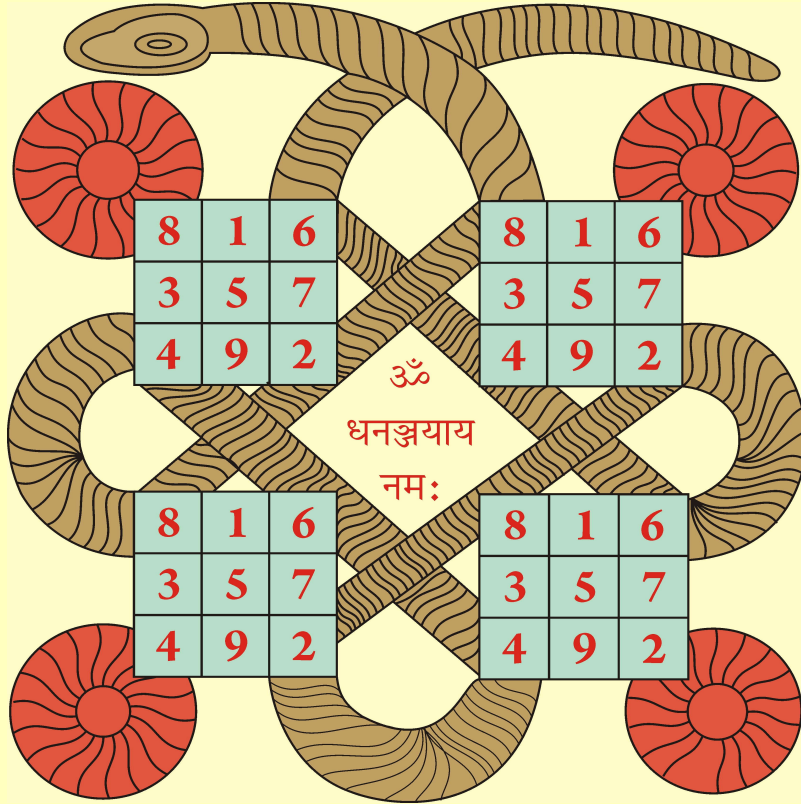
8. चाँदी का छल्ला (बिना जोड़ का) पहनें।
9. तांबे या सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनें।
10. चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।
11. चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।
12. बन्दर पालें, या बन्दरों को भोजन दें।
13. तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को दें।
14. मंदिर में मीठा भोजन बांटें।
15. चीनी बहते पानी में प्रवाहित करें।
16. शहद या सिन्दूर बहते पानी में प्रवाहित करें।
17. मिट्टी की दीवार बनवाकर बारबार गिरायें।
18. घर में नौकर रखें।

मांगलिक दोष निवारण के विशेष उपाय :

चाँदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।

चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर जीवनसाथी को पहनायें।

क्या है कालसर्प योग ?



जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशों के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशों के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव—

- 1— किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
- 2— मानसिक तनाव।
- 3— आत्मविश्वास में कमी।
- 4— स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
- 5— गरीबी और धन की कमी।
- 6— व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
- 7— उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
- 8— मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
- 9— मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
- 10— मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।